Edition : December 2022/007 Price : Free

मातृका MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE

REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

𑆤𑆩𑆱𑇀𑆠𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆼 𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆥𑆶𑆫𑆮𑆳𑆱𑆴𑆤𑆴
𑆠𑇀𑆮𑆳𑆩𑆲𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆡𑆪𑆼 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆢𑆳𑆤𑆁 𑆖 𑆢𑆼𑆲𑆴 𑆩𑆼 ॥

Inside :-

Page 1	• Editor's Foreword.
Page 2	• Saints of Kashmir – Praksh Ram Kurigami by Sh. A.K. Razdan.
Page 3	• Ishavasya Upnishad – Shaloka 5 by Sh. A.K. Razdan.
Page 4	• Udhvaha Gauri Puja by Bala Tripura Sundari Chirravuri • A collection of scriptures in single verse – Shridhar Bhatt Alekh.
Page 5	• Guidelines for transliterating The Sharada script to Devanagari in case of Sanskrita language (Part II).
Page 6	• Article continued.
Page 7	• Article continued.
Page 8	• Prèmúk Níshànû by Master Zinda Kaul.
Page 9	• Àdàr Zagtúk by Unknown. • CST Navratri greetings on Social Media
Page 10	• Ancient Indian Scripts By Kumuda Hegde.
Page 11	• CST Activity Cart • Brief overview of the History of Sharada Script by Rakesh Kaul.
Page 12	• Parmarth Charcha by Lokesh Sharma.
Page 13	• Shri Shankaracharaya Rachit Guruvashtakam by Jyotsna Subba.
Page 14	• Sharada - Varanamala.
Page 15	• Readers Feedback • Shuri Bath • Our Publications.

यह चित्र श्री रामजी का है जिसे दक्षिण भारत के तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में भगवान कोडंडरामा से जाना जाता है। धनुषधारी राम कोडंडा राम के नाम से प्रसिद्ध है। इस रूप में भगवान राम सदैव माता सीता, भ्राता लक्षमन व भक्त हनुमान जी के साथ मंदिर मैं दिखते हैं।

𑆪𑆲 𑆖𑆴𑆠𑇀𑆫 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆫𑆳𑆩𑆘𑆵 𑆑𑆳 𑆲𑆽 𑆘𑆴𑆱𑆼 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟 𑆨𑆳𑆫𑆠 𑆑𑆼 𑆠𑆼𑆭𑆁𑆓𑆳𑆤𑆳 𑆐𑆫 𑆄𑆁𑆣𑇀𑆫 𑆥𑇀𑆫𑆢𑆼𑆯 𑆩𑆼𑆁 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤 𑆑𑆾𑆝𑆁𑆝𑆫𑆳𑆩𑆳 𑆱𑆼 𑆘𑆳𑆤𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆣𑆤𑆶𑆰𑆣𑆳𑆫𑆵 𑆫𑆳𑆩 𑆑𑆾𑆝𑆁𑆝𑆳 𑆫𑆳𑆩 𑆑𑆼 𑆤𑆳𑆩 𑆱𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆲𑆽𑇅 𑆅𑆱 𑆫𑆷𑆥 𑆩𑆼𑆁 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤 𑆫𑆳𑆩 𑆱𑆢𑆽𑆮 𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆱𑆵𑆠𑆳, 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆠𑆳 𑆭𑆑𑇀𑆰𑆩𑆤 𑆮 𑆨𑆑𑇀𑆠 𑆲𑆤𑆶𑆩𑆳𑆤 𑆘𑆵 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆡 𑆩𑆁𑆢𑆴𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆢𑆴𑆒𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅

LEARN SHARADA TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE - PROTECT - PROPAGATE

Chief Editor:- Kuldip Dhar
Cover picture :- Parul Bradoo
Catalog Designer :- Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Veronica Peer, Parul Bradoo

By Kuldip Dhar

Editorial

Knowing Self and exploring the blessings of this life is the most overlooked and ignored need or desire. Our focus usually is on the outer world, being slaves of our senses. We form opinions on the basis of our five senses and give it the name of knowledge. Seeking happiness in these material things without success. Knowing, practicing and propagating positivity is the essence of Life. This is the only way to feel happy personally and spread happiness.

Theme of the Upnishads is "how to realise the identity of all pervading truth and to know Self" (Swami Chinmayananda in his commentary on Upnishads). Vedic Era dates back to the period 1500 to 500 BC. Vaidika Literature, originally passed on by recitation / verbal communication from Guru to Shishya & later penned down by the disciples, is now almost extinct. Out of as many as 1180 Upnishadas, believed to be there, now only 108 Upnishads are available. Out of these only ten / eleven Upnishads are widely known.

Religion & Science came into existence to improve the happiness in life. Unfortunately, all religions aim at serving the immediate generations. As these societies developed and became more & more complicated, same age-old religions failed to serve the developed societies in all their spheres with the same effectiveness. Ritualistic religion of the past, which served well the past generations, was progressively replaced by newer versions to suit the present. Same is true of Science. The anxiety or focus has always been on discoveries, innovations aimed at moving from the wild to more developed societies. A quill-pen / paper may have served the purpose in the past are now replaced by keyboards & PCs / Mobiles being more effective and efficient. Motive and limitation of both Science and the Religion has been to serve the present generation. Both Religion and Science have forgotten to work towards real happiness.

To go beyond the immediate needs and achieve the ultimate Bliss, it is important to read, know and assimilate Vedic teachings by practicing Upnishads. Reading one Upnishada or two every year and practicing the learning, is a reasonable goal that we all can set out for ourselves for achieving the bigger goal of Life, that is total happiness.

Now let's turn our attention to Maatrika. We will be celebrating Vôhòrvòd (Birthday as per Lunar Calendar in Kashmiri) of Maatrika in its new incarnation as e-Newsletter / Digital form on Gauri Tritiya, the Sharada Day. We are coming out with an annual issue on this day which falls on 24th January'23. We are overwhelmed with the continued support of the readers, scholars and writers, who have been contributing to Maatrika from almost every corner of India & abroad. We, Maatrika Editorial Team and Core Sharada Team look forward to your support in terms of whole-hearted participation in the Annual Edition. Please forward your articles, comments and suggestions to maatrika.cst@gmail.com.

Seeking blessings of Maa Sharada for all.

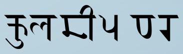

By A.K.Razdan

काश्मीर के महान सन्तों की श्रृंखला में इस मातृका में प्रकाशराम कुरीगामी

श्री प्रकाश राम कुरीगामी (अनन्तनाग) काश्मीर के बहुत प्रसिद्ध भक्ति कवि थे। वे प्रभु श्रीराम के सच्चे भक्त थे और इसी राम भक्ति के कारण उन्हें काश्मीरी भाषा में रामायण की रचना करने की प्रेरणा मिली। इन की लिखी रामायण कश्मीरी भाशा में लिखा पहला महाकाव्य माना जाता है। श्री प्रकाशराम जी ने इस काव्य मे "लव-कुश चरित" को शामिल करके इस को और भी रोचक बना दिया है। श्री प्रकाशराम जी का जन्म १८१९ ई० में कुरीगाम में हुआ था और वहीं पर १८८५ ई० के आस पास वह वैकुण्ठ पदवी को प्राप्त हुए। प्रकाश राम जी की कविताओं की ख़ास बात इसकी सरल परन्तु शुद्ध कश्मीरी भाषा का प्रयोग है। अन्य कश्मीरी कवियों की अपेक्षा आपने अपनी कविता में कठिन संस्कृत एवं फार्सी शब्दावली का बहुत कम उपयोग किया है। कश्मीरी रामायण महाकाव्य "रामावतारचरित" के अतिरिक्त प्रकाशराम जी ने "अक नन्दुन, लव कुश चरित, कृष्णावतार, शिवलग्न" भी लिखे हैं, परन्तु आजकल यह कहीं भी उपलब्ध नहीं है। कश्मीरी भाशा में पाँच अन्य रामायण लिखे गए हैं, परन्तु प्रकाश राम जी की रामायण इन सब में अधिक प्रसिद्ध हैं। इन कि लिखी रामायण का मूलाधार महऋषि वाल्मीकी कृत रामायण तथा आध्यात्म रामायण है। यह रामायण सात काण्डों में विभाजित है। लव कुश चरित इस रामायण के अन्त में शामिल किया गया है। इनके रामायण में राम कथा के अतिरिक्त बहुत सारी गीतों में वन्दनास्तुति सम्बन्धी तथा अन्य भक्ति गीत कहे गए हैं। इन गीतों में कवि ने भक्तिभाव में कहीं कहीं पर मूल कथा से हट कर भी कुछ भक्ति गीत कहे हैं। प्रकाश राम जी का "रामावतारचरित" भारतीय काव्य शास्त्रीय परंपरा के अनुसार सारे लक्षणों से युक्त उच्च कोटि का महाकाव्य है। काव्य के प्रारम्भ कवि ने श्रीगणेश वन्दना से इस प्रकार किया है :-

नमो नमो गजन्द्राय एक दंत दराय च
नमः ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः॥
गॊडन्य सपदुन शरन श्री राज़ु गनीशस
करान युस छुम रख्या यथ मनुश लूकस
दॊयिम कर सतगॊरस पनुनिस नमसकार
दियि सुय गॊर पनुन यॆमि बवसरय तार

इस रामायण के बहुत सारे भक्ति गीतों से पूरे रामायण में श्री प्रकाश राम जी कवि से अधिक पक्के राम भक्त दिखाई देते हैं। एक और गीत में प्रकाशराम जी माता कौशल्या अपने बेटे राम जी के वन जाने पर विलाप करने का विवरण दर्शाते है:-

कौशल्यायि हुंदि गॊबरो करयो गुरू गूरय
परयो राम राम
करयो गुरू गूरय
कोतू गोहम च़ु त्रॊविथ
कुसू ह्यकि हाल भॊविथ
अनी कुस मन्नॊविथ
करयो गुरू गूरय
लगयो पोत छ़ाये
ही कॅरथस हाये
नारस वॊठ बु लाये
करयो गुरू गूरय

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆫𑆳𑆩 𑆑𑆶𑆫𑆵𑆓𑆳𑆩𑆵 (𑆃𑆤𑆤𑇀𑆠𑆤𑆳𑆓) 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆼 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆮𑆴 𑆡𑆼𑇅 𑆮𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆨𑆶 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆫𑆳𑆩 𑆑𑆼 𑆱𑆖𑇀𑆖𑆼 𑆨𑆑𑇀𑆠 𑆡𑆼 𑆃𑆿𑆫 𑆅𑆱𑆵 𑆫𑆳𑆩 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆇𑆤𑇀𑆲𑆼𑆁 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆑𑆵 𑆫𑆖𑆤𑆳 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆫𑆟𑆳 𑆩𑆴𑆬𑆵𑇅 𑆅𑆤 𑆑𑆵 𑆬𑆴𑆒𑆵 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆳 𑆥𑆲𑆬𑆳 𑆩𑆲𑆳𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆤𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆤𑆼 𑆅𑆱 𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 𑆩𑆼 "𑆬𑆮-𑆑𑆶𑆯 𑆖𑆫𑆴𑆠" 𑆑𑆾 𑆯𑆳𑆩𑆴𑆬 𑆑𑆫𑆑𑆼 𑆅𑆱 𑆑𑆾 𑆃𑆿𑆫 𑆨𑆵 𑆫𑆾𑆖𑆑 𑆧𑆤𑆳 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆳 𑆘𑆤𑇀𑆩 𑇑𑇘𑇑𑇙 𑆆𑇐 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆶𑆫𑆵𑆓𑆳𑆩 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆶𑆄 𑆡𑆳 𑆃𑆿𑆫 𑆮𑆲𑆵𑆁 𑆥𑆫 𑇑𑇘𑇘𑇕 𑆆𑇐 𑆑𑆼 𑆄𑆱 𑆥𑆳𑆱 𑆮𑆲 𑆮𑆽𑆑𑆶𑆟𑇀𑆜 𑆥𑆢𑆮𑆵 𑆑𑆾 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆲𑆶𑆍𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆵 𑆑𑆮𑆴𑆠𑆳𑆃𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆒𑆳𑆱 𑆧𑆳𑆠 𑆅𑆱𑆑𑆵 𑆱𑆫𑆬 𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆑𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆾𑆓 𑆲𑆽𑇅 𑆃𑆤𑇀𑆪 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆑𑆮𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆄𑆥𑆤𑆼 𑆃𑆥𑆤𑆵 𑆑𑆮𑆴𑆠𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆜𑆴𑆤 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠 𑆍𑆮𑆁 𑆦𑆳𑆫𑇀𑆱𑆵 𑆯𑆧𑇀𑆢𑆳𑆮𑆬𑆵 𑆑𑆳 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆑𑆩 𑆇𑆥𑆪𑆾𑆓 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆩𑆲𑆳𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 "𑆫𑆳𑆩𑆳𑆮𑆠𑆳𑆫𑆖𑆫𑆴𑆠" 𑆑𑆼 𑆃𑆠𑆴𑆫𑆴𑆑𑇀𑆠 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆤𑆼 "𑆃𑆑 𑆤𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤, 𑆬𑆮 𑆑𑆶𑆯 𑆖𑆫𑆴𑆠, 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆳𑆮𑆠𑆳𑆫, 𑆯𑆴𑆮𑆬𑆓𑇀𑆤" 𑆨𑆵 𑆬𑆴𑆒𑆼 𑆲𑆽𑆁, 𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆄𑆘𑆑𑆬 𑆪𑆲 𑆑𑆲𑆵𑆁 𑆨𑆵 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆲𑆽𑇅 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑆳𑆀𑆖 𑆃𑆤𑇀𑆪 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆬𑆴𑆒𑆼 𑆓𑆍 𑆲𑆽𑆁, 𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆵 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆅𑆤 𑆱𑆧 𑆩𑆼𑆁 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆅𑆤 𑆑𑆴 𑆬𑆴𑆒𑆵 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆑𑆳 𑆩𑆷𑆬𑆳𑆣𑆳𑆫 𑆩𑆲𑆉𑆰𑆴 𑆮𑆳𑆬𑇀𑆩𑆵𑆑𑆵 𑆑𑆸𑆠 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆠𑆡𑆳 𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆲𑆽𑇅 𑆪𑆲 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆱𑆳𑆠 𑆑𑆳𑆟𑇀𑆝𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆴𑆨𑆳𑆘𑆴𑆠 𑆲𑆽𑇅 𑆬𑆮 𑆑𑆶𑆯 𑆖𑆫𑆴𑆠 𑆅𑆱 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑇀𑆠 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆳𑆩𑆴𑆬 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆅𑆤𑆑𑆼 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆩𑆼𑆁 𑆫𑆳𑆩 𑆑𑆡𑆳 𑆑𑆼 𑆃𑆠𑆴𑆫𑆴𑆑𑇀𑆠 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆱𑆳𑆫𑆵 𑆓𑆵𑆠𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆤𑇀𑆢𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆴 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆵 𑆠𑆡𑆳 𑆃𑆤𑇀𑆪 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆓𑆵𑆠 𑆑𑆲𑆼 𑆓𑆍 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆅𑆤 𑆓𑆵𑆠𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆮𑆴 𑆤𑆼 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴𑆨𑆳𑆮 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆲𑆵𑆁 𑆑𑆲𑆵𑆁 𑆥𑆫 𑆩𑆷𑆬 𑆑𑆡𑆳 𑆱𑆼 𑆲𑆛 𑆑𑆫 𑆨𑆵 𑆑𑆶𑆗 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆓𑆵𑆠 𑆑𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆳 "𑆫𑆳𑆩𑆳𑆮𑆠𑆳𑆫𑆖𑆫𑆴𑆠" 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪 𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵𑆪 𑆥𑆫𑆁𑆥𑆫𑆳 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆱𑆳𑆫 𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆬𑆑𑇀𑆰𑆟𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠 𑆇𑆖𑇀𑆖 𑆑𑆾𑆛𑆴 𑆑𑆳 𑆩𑆲𑆳𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 𑆲𑆽𑇅 𑆑𑆳𑆮𑇀𑆪 𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆩𑇀𑆨 𑆑𑆮𑆴 𑆤𑆼 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆓𑆟𑆼𑆯 𑆮𑆤𑇀𑆢𑆤𑆳 𑆱𑆼 𑆅𑆱 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆲𑆽 :-

𑆤𑆩𑆾 𑆤𑆩𑆾 𑆓𑆘𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪 𑆍𑆑 𑆢𑆁𑆠 𑆢𑆫𑆳𑆪 𑆖
𑆤𑆩𑆂 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆥𑆶𑆠𑇀𑆫𑆳𑆪 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆓𑆟𑆼𑆯𑆳𑆪 𑆤𑆩𑆾 𑆤𑆩𑆂𑇆
𑆓𑆾𑆝𑆤𑇀𑆪 𑆱𑆥𑆢𑆶𑆤 𑆯𑆫𑆤 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆫𑆳𑆘𑆶 𑆓𑆤𑆵𑆯𑆱
𑆑𑆫𑆳𑆤 𑆪𑆶𑆱 𑆗𑆶𑆩 𑆫𑆒𑇀𑆪𑆳 𑆪𑆡 𑆩𑆤𑆶𑆯 𑆬𑆷𑆑𑆱
𑆢𑆾𑆪𑆴𑆩 𑆑𑆫 𑆱𑆠𑆓𑆾𑆫𑆱 𑆥𑆤𑆶𑆤𑆴𑆱 𑆤𑆩𑆱𑆑𑆳𑆫
𑆢𑆴𑆪𑆴 𑆱𑆶𑆪 𑆓𑆾𑆫 𑆥𑆤𑆶𑆤 𑆪𑆼𑆩𑆴 𑆧𑆮𑆱𑆫𑆪 𑆠𑆳𑆫

𑆅𑆱 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆑𑆼 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆓𑆵𑆠𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆥𑆷𑆫𑆼 𑆫𑆳𑆩𑆳𑆪𑆟 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆮𑆴 𑆱𑆼 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆥𑆑𑇀𑆑𑆼 𑆫𑆳𑆩 𑆨𑆑𑇀𑆠 𑆢𑆴𑆒𑆳𑆆 𑆢𑆼𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆍𑆑 𑆃𑆿𑆫 𑆓𑆵𑆠 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆑𑆿𑆯𑆬𑇀𑆪𑆳 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆧𑆼𑆛𑆼 𑆫𑆳𑆩 𑆘𑆵 𑆑𑆼 𑆮𑆤 𑆘𑆳𑆤𑆼 𑆥𑆫 𑆮𑆴𑆬𑆳𑆥 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆳 𑆮𑆴𑆮𑆫𑆟 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆳𑆠𑆼 𑆲𑆽:

𑆑𑆿𑆯𑆬𑇀𑆪𑆳𑆪𑆴 𑆲𑆶𑆁𑆢𑆴 𑆓𑆾𑆧𑆫𑆾 𑆑𑆫𑆪𑆾 𑆓𑆷𑆫𑆶 𑆓𑆷𑆫𑆪
𑆥𑆫𑆪𑆾 𑆫𑆳𑆩 𑆫𑆳𑆩
𑆑𑆫𑆪𑆾 𑆓𑆷𑆫𑆶 𑆓𑆷𑆫𑆪
𑆑𑆾𑆠𑆷 𑆓𑆾𑆲𑆩 𑆖𑆶 𑆠𑇀𑆫𑆾𑆮𑆴𑆡
𑆑𑆶𑆱𑆷 𑆲𑇀𑆪𑆑𑆴 𑆲𑆳𑆬 𑆨𑆾𑆮𑆴𑆡
𑆃𑆤𑆵 𑆑𑆶𑆱 𑆩𑆤𑇀𑆤𑆾𑆮𑆴𑆡
𑆑𑆫𑆪𑆾 𑆓𑆷𑆫𑆶 𑆓𑆷𑆫𑆪
𑆬𑆓𑆪𑆾 𑆥𑆾𑆠 𑆗𑆳𑆪𑆼
𑆲𑆵 𑆑𑆫𑆡𑆱 𑆲𑆳𑆪𑆼
𑆤𑆳𑆫𑆱 𑆮𑆾𑆜 𑆧𑆶 𑆬𑆳𑆪𑆼
𑆑𑆫𑆪𑆾 𑆓𑆷𑆫𑆶 𑆓𑆷𑆫𑆪

By A.K.Razdan

श्री ईशावास्य उपनिषद् (श्लोक - ५)/𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆆𑆯𑆳𑆮𑆳𑆱𑇀𑆪 𑆇𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 (𑆯𑇀𑆬𑆾𑆑 -𑇕)

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥५॥

“परमेश्वर चलते हैं और नहीं भी चलते, वे बहुत दूर हैं परन्तु अत्यन्त निकट भी हैं।"

वे सब के भीतर होते हुए भी सब के बाहर भी हैं।”

उपनिषद् के इस मंत्र में पर ब्रह्म परमेश्वर के कुछ दिव्य कार्यकालों का वर्णन किया गया है, जो शेष उनकी अचिन्त्य शक्तियों द्वारा सम्पन्न होती हैं। इस मंत्र में दिए गए विरोधाभासी कथन में भगवान् की अचिंतनीय शक्तियाँ सिद्ध होती हैं। “वे चलते हैं और नहीं भी चलते।”

साधारणतःअगर कोई चल सकता है, तो यह कहना कि वो चल नहीं सकता, तर्क विरुद्ध होगा। मगर ईश्वर के संदर्भ में ऐसा विरोधाभास केवल उनकी असीमित शक्तियों को दर्शाता है। हम अपने सीमित ज्ञान के कारण ऐसे विरोधी कथनों को समझ नहीं सकते। मायावाद सिद्धान्त को मानने वाले निर्विशैषवादी भगवान (attribute-less God) के साकार रूप को ठुकराते हैं, किन्तु सगुण साकार ईश्वरको मानने वाले उन की अचिन्त्य शक्तियों को स्वीकार करते हैं और उनका कथन है कि इन शक्तियों के बिना परमेश्वर का कोई अस्तित्व ही नही है। अचिन्त्य शक्तियों से पूर्ण होने के कारण भगवान् किसी भी माध्यम से हमरी भक्ति को स्वीकार करते हैं और अपनी इच्छानुसार अपनी शक्तियों को रूपान्तरित कर सकते हैं। परमपिता परमेश्वर अत्यन्त दूर होते हुए भी हम सब में व्याप्त हैं और हम सबके निकट से निकटतम हैं। तथ्य तो यह है कि भीतर तथा बाहर, ईश्वर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

𑆠𑆢𑆼𑆘𑆠𑆴 𑆠𑆤𑇀𑆤𑆽𑆘𑆠𑆴 𑆠𑆢𑇀𑆢𑆷𑆫𑆼 𑆠𑆢𑇀𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴𑆑𑆼𑇅
𑆠𑆢𑆤𑇀𑆠𑆫𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆠𑆢𑆶 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪𑆳𑆱𑇀𑆪 𑆧𑆳𑆲𑇀𑆪𑆠𑆂𑇆𑇕𑇆

“𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆖𑆬𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆨𑆵 𑆖𑆬𑆠𑆼, 𑆮𑆼 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆢𑆷𑆫 𑆲𑆽𑆁 𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠 𑆤𑆴𑆑𑆛 𑆨𑆵 𑆲𑆽𑆁𑇅"

𑆮𑆼 𑆱𑆧 𑆑𑆼 𑆨𑆵𑆠𑆫 𑆲𑆾𑆠𑆼 𑆲𑆶𑆍 𑆨𑆵 𑆱𑆧 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆲𑆫 𑆨𑆵 𑆲𑆽𑆁𑇅”

𑆇𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 𑆑𑆼 𑆅𑆱 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑆫 𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩 𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆑𑆼 𑆑𑆶𑆗 𑆢𑆴𑆮𑇀𑆪 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆑𑆳𑆬𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆤 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽, 𑆘𑆾 𑆯𑆼𑆰 𑆇𑆤𑆑𑆵 𑆃𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆢𑇀𑆮𑆳𑆫𑆳 𑆱𑆩𑇀𑆥𑆤𑇀𑆤 𑆲𑆾𑆠𑆵 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆅𑆱 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆢𑆴𑆍 𑆓𑆍 𑆮𑆴𑆫𑆾𑆣𑆳𑆨𑆳𑆱𑆵 𑆑𑆡𑆤 𑆩𑆼𑆁 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆑𑆵 𑆃𑆖𑆴𑆁𑆠𑆤𑆵𑆪 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆳𑆀 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆲𑆾𑆠𑆵 𑆲𑆽𑆁𑇅 “𑆮𑆼 𑆖𑆬𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆨𑆵 𑆖𑆬𑆠𑆼𑇅”

𑆱𑆳𑆣𑆳𑆫𑆟𑆠𑆂𑆃𑆓𑆫 𑆑𑆾𑆆 𑆖𑆬 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽, 𑆠𑆾 𑆪𑆲 𑆑𑆲𑆤𑆳 𑆑𑆴 𑆮𑆾 𑆖𑆬 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆱𑆑𑆠𑆳, 𑆠𑆫𑇀𑆑 𑆮𑆴𑆫𑆶𑆢𑇀𑆣 𑆲𑆾𑆓𑆳𑇅 𑆩𑆓𑆫 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆑𑆼 𑆱𑆁𑆢𑆫𑇀𑆨 𑆩𑆼𑆁 𑆎𑆱𑆳 𑆮𑆴𑆫𑆾𑆣𑆳𑆨𑆳𑆱 𑆑𑆼𑆮𑆬 𑆇𑆤𑆑𑆵 𑆃𑆱𑆵𑆩𑆴𑆠 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆳𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆲𑆩 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆱𑆵𑆩𑆴𑆠 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆎𑆱𑆼 𑆮𑆴𑆫𑆾𑆣𑆵 𑆑𑆡𑆤𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆱𑆩𑆙 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆱𑆑𑆠𑆼𑇅 𑆩𑆳𑆪𑆳𑆮𑆳𑆢 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠 𑆑𑆾 𑆩𑆳𑆤𑆤𑆼 𑆮𑆳𑆬𑆼 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆯𑆽𑆰𑆮𑆳𑆢𑆵 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤 (attribute-less God) 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆑𑆳𑆫 𑆫𑆷𑆥 𑆑𑆾 𑆜𑆶𑆑𑆫𑆳𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁, 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆓𑆶𑆟 𑆱𑆳𑆑𑆳𑆫 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫𑆑𑆾 𑆩𑆳𑆤𑆤𑆼 𑆮𑆳𑆬𑆼 𑆇𑆤 𑆑𑆵 𑆃𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆱𑇀𑆮𑆵𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆇𑆤𑆑𑆳 𑆑𑆡𑆤 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆅𑆤 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆧𑆴𑆤𑆳 𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆑𑆳 𑆑𑆾𑆆 𑆃𑆱𑇀𑆠𑆴𑆠𑇀𑆮 𑆲𑆵 𑆤𑆲𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆃𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟 𑆲𑆾𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆨𑆵 𑆩𑆳𑆣𑇀𑆪𑆩 𑆱𑆼 𑆲𑆩𑆫𑆵 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆾 𑆱𑇀𑆮𑆵𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆃𑆥𑆤𑆵 𑆅𑆖𑇀𑆗𑆳𑆤𑆶𑆱𑆳𑆫 𑆃𑆥𑆤𑆵 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆫𑆷𑆥𑆳𑆤𑇀𑆠𑆫𑆴𑆠 𑆑𑆫 𑆱𑆑𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆥𑆫𑆩𑆥𑆴𑆠𑆳 𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠 𑆢𑆷𑆫 𑆲𑆾𑆠𑆼 𑆲𑆶𑆍 𑆨𑆵 𑆲𑆩 𑆱𑆧 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆲𑆩 𑆱𑆧𑆑𑆼 𑆤𑆴𑆑𑆛 𑆱𑆼 𑆤𑆴𑆑𑆛𑆠𑆩 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆠𑆡𑇀𑆪 𑆠𑆾 𑆪𑆲 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆨𑆵𑆠𑆫 𑆠𑆡𑆳 𑆧𑆳𑆲𑆫, 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆑𑆼 𑆃𑆠𑆴𑆫𑆴𑆑𑇀𑆠 𑆑𑆶𑆗 𑆨𑆵 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆲𑆽𑇅

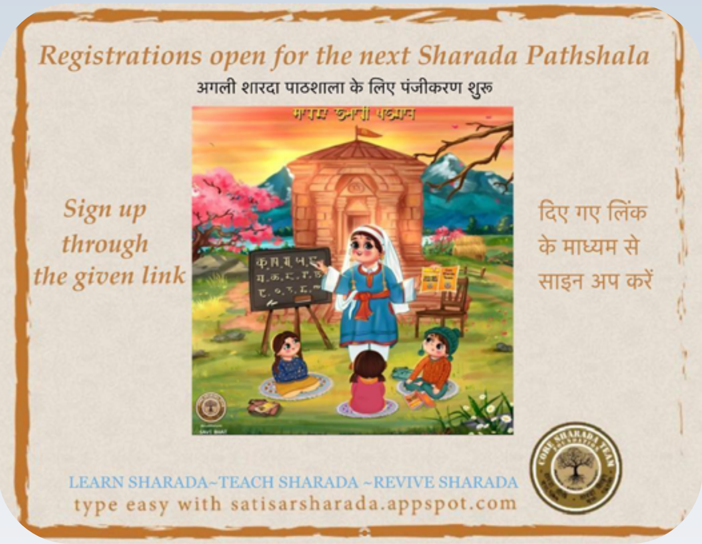

By Bala Tripura Sundari Chirravuri

उद्वाहःगौरीपूजा / 𑆇𑆢𑇀𑆮𑆳𑆲𑆂𑆓𑆿𑆫𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳

विवाहकाले प्रथमं कन्याः गौरीपूजां कुर्वन्ति।अयमाचारः प्रायः भारतदेशे सर्वत्रापि दृश्यते।श्रीकृष्णे एव प्रेमामनुभूय तं विवाहं कर्तुं अभिलाषणीया रुक्मिणी देवी अपि गौरीपूजामकरोत्। गौरीपूजा किमर्थं करणीया? सरस्वतीपूजा उत वा लक्ष्मीपूजा किमर्थं न आचरन्ति? इति सन्देहस्य समाधानत्वेन परमाचार्यवर्याणां प्रसङ्गः

लक्ष्मीदेव्याः पतिः श्रीमहाविष्णुरस्ति। स भगवान् सातिशयसौन्दर्ययुक्तः अलङ्कारप्रियः महदैश्वर्यसम्पन्नश्च। तेन सह दाम्पत्यजीवनं अत्यन्तसुखेन चलति। किन्तु शिवः तथा नास्ति खलु। स तु स्मशानवासी। सर्पान् हारमिव कण्ठे अलङ्करोति। हस्ते कपालं धरति। महाभयङ्कर इव द्योतते। तस्य निकटे विभूतिर्विना किमपि ऐश्वर्यं नास्ति।तेन सह संसारजीवनं अनिर्वचनीयं भवति। बहु क्लेशतरं भवति। अत्यधिकं सहनमावश्यकं भवति। अपमानग्रसनं आवश्यकमत्र। तथापि बहिः असंतृप्तिचिह्वानि न प्रकटनीयानि। क्लेशान् प्रसह्य मुखे मन्दहासमेव अनवरतं दर्शनीयम्। इमानि कदा साध्यानि भवन्ति? कष्टानि अतिरिच्य भर्तारं प्रति अत्यधिका प्रेम्णा आराधयति चेदेव साध्यते। विवाहात् पूर्वं परं च बालिकानां अनुभवः पश्यन्तु।

विवाहात् पूर्वं अपरिचितः नूतनव्यक्तिः स्वस्याः स्वप्नराजकुमारः न भविता।सुसम्पन्नः न भविता। परन्तु तस्याः जीवितं तेन सह ग्रथितः। अत एव विवाहाः स्वर्गे निर्णयन्ति इति आर्योक्तिः वर्तते। एतत् सूत्रं अस्माकं देशस्य व्यवस्थायाः एव न विश्वस्मिन् सर्वत्रापि वर्तते। भर्तारं प्रति भार्यायाः पत्नीं प्रति पतेः मनसि उपस्थिता प्रेमैव जयति। सतीदेवी अस्माकं आदर्शनीया भवति। दक्षः तस्याः जन्मदातापि सः स्वपतिं ईश्वरं रूपरेखादिकमाश्रित्य दरिद्रतामाश्रित्य च अवहेलनपूर्वकतया दूषणं कृतवान्। तद्दूषणमपि श्रोतुं अशक्यत्वात् सतीमाता अग्निप्रविष्टा जाता। तदेव ममेकभावः। तादृशां गौरीसंस्मरणेन कुटुम्बजीवने कलहाः न अवाप्स्यन्ति।संसारः स्वर्गतुल्यो भवति। एतदर्थमेव विवाहात् पूर्वं गौरीपूजां कारयन्ति।

𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆑𑆳𑆬𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆁 𑆑𑆤𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆓𑆿𑆫𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳𑆁 𑆑𑆶𑆫𑇀𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴𑇅𑆃𑆪𑆩𑆳𑆖𑆳𑆫𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆂 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆢𑆼𑆯𑆼 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫𑆳𑆥𑆴 𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆼 𑆍𑆮 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆩𑆳𑆩𑆤𑆶𑆨𑆷𑆪 𑆠𑆁 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆁 𑆑𑆫𑇀𑆠𑆶𑆁 𑆃𑆨𑆴𑆬𑆳𑆰𑆟𑆵𑆪𑆳 𑆫𑆶𑆑𑇀𑆩𑆴𑆟𑆵 𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆃𑆥𑆴 𑆓𑆿𑆫𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳𑆩𑆑𑆫𑆾𑆠𑇀𑇅 𑆓𑆿𑆫𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳 𑆑𑆴𑆩𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆑𑆫𑆟𑆵𑆪𑆳? 𑆱𑆫𑆱𑇀𑆮𑆠𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳 𑆇𑆠 𑆮𑆳 𑆬𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳 𑆑𑆴𑆩𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆤 𑆄𑆖𑆫𑆤𑇀𑆠𑆴? 𑆅𑆠𑆴 𑆱𑆤𑇀𑆢𑆼𑆲𑆱𑇀𑆪 𑆱𑆩𑆳𑆣𑆳𑆤𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪𑆮𑆫𑇀𑆪𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆕𑇀𑆓𑆂

𑆬𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩𑆵𑆢𑆼𑆮𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆥𑆠𑆴𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆲𑆳𑆮𑆴𑆰𑇀𑆟𑆶𑆫𑆱𑇀𑆠𑆴𑇅 𑆱 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆱𑆳𑆠𑆴𑆯𑆪𑆱𑆿𑆤𑇀𑆢𑆫𑇀𑆪𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆂 𑆃𑆬𑆕𑇀𑆑𑆳𑆫𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪𑆂 𑆩𑆲𑆢𑆽𑆯𑇀𑆮𑆫𑇀𑆪𑆱𑆩𑇀𑆥𑆤𑇀𑆤𑆯𑇀𑆖𑇅 𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆲 𑆢𑆳𑆩𑇀𑆥𑆠𑇀𑆪𑆘𑆵𑆮𑆤𑆁 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆱𑆶𑆒𑆼𑆤 𑆖𑆬𑆠𑆴𑇅 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆯𑆴𑆮𑆂 𑆠𑆡𑆳 𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆴 𑆒𑆬𑆶𑇅 𑆱 𑆠𑆶 𑆱𑇀𑆩𑆯𑆳𑆤𑆮𑆳𑆱𑆵𑇅 𑆱𑆫𑇀𑆥𑆳𑆤𑇀 𑆲𑆳𑆫𑆩𑆴𑆮 𑆑𑆟𑇀𑆜𑆼 𑆃𑆬𑆕𑇀𑆑𑆫𑆾𑆠𑆴𑇅 𑆲𑆱𑇀𑆠𑆼 𑆑𑆥𑆳𑆬𑆁 𑆣𑆫𑆠𑆴𑇅 𑆩𑆲𑆳𑆨𑆪𑆕𑇀𑆑𑆫 𑆅𑆮 𑆢𑇀𑆪𑆾𑆠𑆠𑆼𑇅 𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆤𑆴𑆑𑆛𑆼 𑆮𑆴𑆨𑆷𑆠𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆤𑆳 𑆑𑆴𑆩𑆥𑆴 𑆎𑆯𑇀𑆮𑆫𑇀𑆪𑆁 𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆴𑇅𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆲 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆘𑆵𑆮𑆤𑆁 𑆃𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆖𑆤𑆵𑆪𑆁 𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆧𑆲𑆶 𑆑𑇀𑆬𑆼𑆯𑆠𑆫𑆁 𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆣𑆴𑆑𑆁 𑆱𑆲𑆤𑆩𑆳𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑𑆁 𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆃𑆥𑆩𑆳𑆤𑆓𑇀𑆫𑆱𑆤𑆁 𑆄𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑𑆩𑆠𑇀𑆫𑇅 𑆠𑆡𑆳𑆥𑆴 𑆧𑆲𑆴𑆂 𑆃𑆱𑆁𑆠𑆸𑆥𑇀𑆠𑆴𑆖𑆴𑆲𑇀𑆮𑆳𑆤𑆴 𑆤 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆛𑆤𑆵𑆪𑆳𑆤𑆴𑇅 𑆑𑇀𑆬𑆼𑆯𑆳𑆤𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆲𑇀𑆪 𑆩𑆶𑆒𑆼 𑆩𑆤𑇀𑆢𑆲𑆳𑆱𑆩𑆼𑆮 𑆃𑆤𑆮𑆫𑆠𑆁 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆵𑆪𑆩𑇀𑇅 𑆅𑆩𑆳𑆤𑆴 𑆑𑆢𑆳 𑆱𑆳𑆣𑇀𑆪𑆳𑆤𑆴 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴? 𑆑𑆰𑇀𑆛𑆳𑆤𑆴 𑆃𑆠𑆴𑆫𑆴𑆖𑇀𑆪 𑆨𑆫𑇀𑆠𑆳𑆫𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆣𑆴𑆑𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆩𑇀𑆟𑆳 𑆄𑆫𑆳𑆣𑆪𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆢𑆼𑆮 𑆱𑆳𑆣𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆳𑆠𑇀 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆥𑆫𑆁 𑆖 𑆧𑆳𑆬𑆴𑆑𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆃𑆤𑆶𑆨𑆮𑆂 𑆥𑆯𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆶𑇅

𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆳𑆠𑇀 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆃𑆥𑆫𑆴𑆖𑆴𑆠𑆂 𑆤𑆷𑆠𑆤𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆥𑇀𑆤𑆫𑆳𑆘𑆑𑆶𑆩𑆳𑆫𑆂 𑆤 𑆨𑆮𑆴𑆠𑆳𑇅𑆱𑆶𑆱𑆩𑇀𑆥𑆤𑇀𑆤𑆂 𑆤 𑆨𑆮𑆴𑆠𑆳𑇅 𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆠𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆘𑆵𑆮𑆴𑆠𑆁 𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆲 𑆓𑇀𑆫𑆡𑆴𑆠𑆂𑇅 𑆃𑆠 𑆍𑆮 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆳𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆫𑇀𑆓𑆼 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆟𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆅𑆠𑆴 𑆄𑆫𑇀𑆪𑆾𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼𑇅 𑆍𑆠𑆠𑇀 𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆳𑆑𑆁 𑆢𑆼𑆯𑆱𑇀𑆪 𑆮𑇀𑆪𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆍𑆮 𑆤 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫𑆳𑆥𑆴 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼𑇅 𑆨𑆫𑇀𑆠𑆳𑆫𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆨𑆳𑆫𑇀𑆪𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆥𑆠𑇀𑆤𑆵𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆥𑆠𑆼𑆂 𑆩𑆤𑆱𑆴 𑆇𑆥𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆩𑆽𑆮 𑆘𑆪𑆠𑆴𑇅 𑆱𑆠𑆵𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆳𑆑𑆁 𑆄𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆵𑆪𑆳 𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆂 𑆠𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆘𑆤𑇀𑆩𑆢𑆳𑆠𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆥𑆠𑆴𑆁 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫𑆁 𑆫𑆷𑆥𑆫𑆼𑆒𑆳𑆢𑆴𑆑𑆩𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆢𑆫𑆴𑆢𑇀𑆫𑆠𑆳𑆩𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆖 𑆃𑆮𑆲𑆼𑆬𑆤𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆑𑆠𑆪𑆳 𑆢𑆷𑆰𑆟𑆁 𑆑𑆸𑆠𑆮𑆳𑆤𑇀𑇅 𑆠𑆢𑇀𑆢𑆷𑆰𑆟𑆩𑆥𑆴 𑆯𑇀𑆫𑆾𑆠𑆶𑆁 𑆃𑆯𑆑𑇀𑆪𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀 𑆱𑆠𑆵𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆃𑆓𑇀𑆤𑆴𑆥𑇀𑆫𑆮𑆴𑆰𑇀𑆛𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳𑇅 𑆠𑆢𑆼𑆮 𑆩𑆩𑆼𑆑𑆨𑆳𑆮𑆂𑇅 𑆠𑆳𑆢𑆸𑆯𑆳𑆁 𑆓𑆿𑆫𑆵𑆱𑆁𑆱𑇀𑆩𑆫𑆟𑆼𑆤 𑆑𑆶𑆛𑆶𑆩𑇀𑆧𑆘𑆵𑆮𑆤𑆼 𑆑𑆬𑆲𑆳𑆂 𑆤 𑆃𑆮𑆳𑆥𑇀𑆱𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴𑇅𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆫𑇀𑆓𑆠𑆶𑆬𑇀𑆪𑆾 𑆨𑆮𑆠𑆴𑇅 𑆍𑆠𑆢𑆫𑇀𑆡𑆩𑆼𑆮 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆲𑆳𑆠𑇀 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆓𑆿𑆫𑆵𑆥𑆷𑆘𑆳𑆁 𑆑𑆳𑆫𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴𑇅

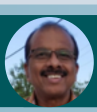

By Shridharji Bhatt

A collection of scriptures in single verse

All of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत् - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

श्रीमद्भागवतम् ||

आदौ देवकिदेविगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनं
मायापूतनि जीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुताः पालनं
श्रीमद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆢𑇀𑆨𑆳𑆓𑆮𑆠𑆩𑇀 ||

𑆄𑆢𑆿 𑆢𑆼𑆮𑆑𑆴𑆢𑆼𑆮𑆴𑆓𑆫𑇀𑆨𑆘𑆤𑆤𑆁 𑆓𑆾𑆥𑆵𑆓𑆸𑆲𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆣𑆤𑆁
𑆩𑆳𑆪𑆳𑆥𑆷𑆠𑆤𑆴 𑆘𑆵𑆮𑆴𑆠𑆳𑆥𑆲𑆫𑆟𑆁 𑆓𑆾𑆮𑆫𑇀𑆣𑆤𑆾𑆢𑇀𑆣𑆳𑆫𑆟𑆩𑇀 |
𑆑𑆁𑆱𑆖𑇀𑆗𑆼𑆢𑆤𑆑𑆿𑆫𑆮𑆳𑆢𑆴𑆲𑆤𑆤𑆁 𑆑𑆶𑆤𑇀𑆠𑆵𑆱𑆶𑆠𑆳𑆂 𑆥𑆳𑆬𑆤𑆁
𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆢𑇀𑆨𑆳𑆓𑆮𑆠𑆁 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟𑆑𑆡𑆴𑆠𑆁 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆬𑆵𑆬𑆳𑆩𑆸𑆠𑆩𑇀 ||

Born to queen Devaki, brought up by Gopis, took the life of Ogress Pootana, lifted Govardhana mountain, beheaded his uncle Kansa, helped in killing the Kouravas and looked after the children of Kunti. This is in short the ancient story of Bhagawatham, which describes the nectar like play of Lord Krishna.

By Shridharji Bhatt

Guidelines for transliterating The Sharada script to Devanagari in case of Sanskrita language (Part III)

छन्द क्या हैं? छन्दः पदार्थः,यह अक्षराणां विन्यासविशेषः है।
शिक्षा व्याकरणं छन्दः निरुक्तं ज्योतिशम तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥ (अनुष्टुप् छन्दः)
मेरा यह सुझाव है कि आप वैदिक शास्त्र विस्तार से पडें क्योंकि यहां उस का विश्लेषण करना संभव नहीं है।
सभापूजा मैं : ९ विभिन्न छंदों को वर्गीकृत किया गया है, जिस में से १,६ और ९ अनुष्टुब् छंद है। इन सभी में एक लाईन में १६ अक्षर हैं, उधाहरण से श्रीमदभगवद्गीता, विष्णुसहस्रनामाः ललिता सहस्रनामाः॥ न०२ - मालिनी चारों लाइन में १५ अक्षर हें। न०३ और ५ जिस में चारो लाईन में १९ अक्षर हें शार्दुलविक्रीडित है। क्रमांक ४- की चारों लाईन में १७ अक्षर हें ऐर यह शिखरणी है। क्रमांक ७ उपाजति है ओर इस की चारों लाइन में ११ अक्षर हैं व इंद्रवज्र व उपेंद्रवज्र मिले हैं। क्रमांक ८ शालिनी है इस में भी प्रतेक लाइन में ११ अक्षर हैं परंतु इस में घनः उपाजति से भिन्न है। यह सब तभी आसानी के साथ समझ में आ सकता है अगर शास्त्र क्रमबद्ध ढंग से पडा / समझा जाए। संस्कृत का शारदा से देवनागरी में लिप्यंतरण करने के लिये छंदों का ज्ञान आवश्यक है।
क्षेमराजा का लिखा स्पंदनिर्णयः गृंथ का एक प्रश्ट इस चित्र में दिखाया गया है। हर लाइन का लिप्यंतरण इस प्रकार है। pic1

1. ॐ नमः शिवाय स्वातन्त्र्यशालिने ॥ सर्वं स्वात्म-
२. स्वरूपं मकुरनगरवत्स्वस्वरूपात्स्वतन्त्रस्वच्छस्वात्म-
३. स्वभित्तौ कलयति धरणीतश्शिवान्तं सदा या। दृग्दे-
४. वी मन्त्रवीर्यं सततसमुदिता शब्दराश्यात्म(नां) पूर्णा
लेखक ने -नां को काट दिया है। शब्दराश्यात्मपूर्णा (एक ही शब्द है)
५. हन्तानन्दस्फुरत्ता जयति जग ति सा शाङ्करी स्पन्द-
६. शक्तिः॥ * स्पन्दाऽमृते चर्वितेऽपि स्पन्दसन्दोहतो म-
७. नाक्। पूर्णस्तच्चर्वणाभोगोद्योग एष मयाश्रितः ॥ (अनुष्टुब्)
८. सम्यक्सूत्रसमन्वयं परिगतिं तत्वे परस्मिन्परां तीक्ष्णां
९.युक्तिकथामुपायघटनां स्पष्टार्थसद्व्याकृतिम्(तिं)। (यह अनिवार्य है)
१०. ज्ञातुं वाञ्छयचिच्छिवोपनिषदं श्रीस्पन्दशास्त्रस्य (आखरी अक्षर में हलंत होना चाहिये)
११. तद्वृत्यावत्र धियं निधत्त सुधियः स्पन्दश्रियं प्राप्नु-
१२. त ||** इह हि विश्वाऽनुजिघृक्षापरपरमशि-
१३. वावेशोन्मीलितमहिमा स्वप्नोपलब्धोपदेशः श्री
* स्रग्धरा ** शार्दूलविक्रीडित

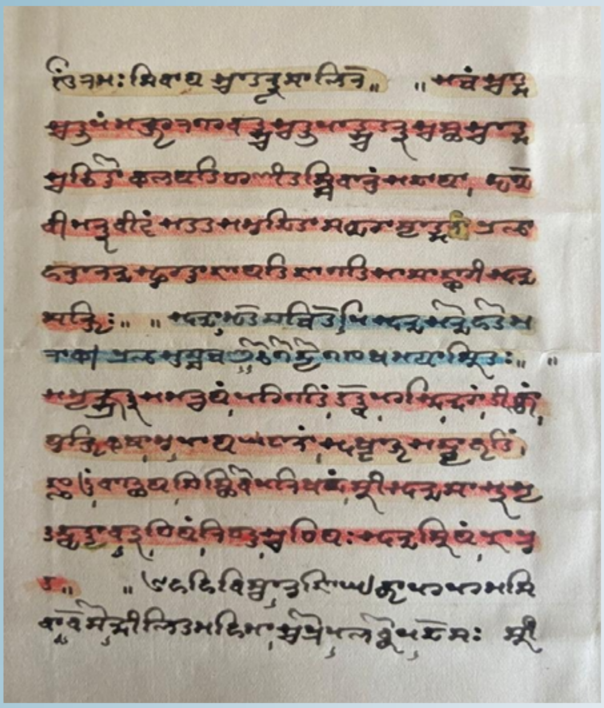

भाषा को लिखने के लिये काव्य के अनुरूप
ॐ नमः शिवाय स्वातन्त्र्यशालिने ॥
सर्वं स्वात्मस्वरूपं मकुरनगरवत्स्वस्वरूपात्स्वतन्त्र-
स्वच्छस्वात्मस्वभित्तौ कलयति धरणीतश्शिवान्तं सदा या।
दृग्देवी मन्त्रवीर्यं सततसमुदिता शब्दराश्यात्मपूर्णा
हन्तानन्दस्फुरत्ता जयति जगति सा शाङ्करी स्पन्दशक्तिः॥ * स्रग्धरा वृत्त
स्पन्दाऽमृते चर्वितेऽपि स्पन्दसन्दोहतो मनाक्।
पूर्णस्तच्चर्वणाभोगोद्योग एष मयाश्रितः ॥ (अनुष्टुब् छन्दः)
सम्यक्सूत्रसमन्वयं परिगतिं तत्वे परस्मिन्परां
तीक्ष्णां युक्तिकथामुपायघटनां स्पष्टार्थसद्व्याकृतिम्(तिं)।
ज्ञातुं वाञ्छयचिच्छिवोपनिषदं श्रीस्पन्दशास्त्रस्य त-
द्वृत्यावत्र धियं निधत्तसुधियः स्पन्दश्रियं प्राप्नुत ॥ ** शार्दूलविक्रीडित वृत्त
इह हि विश्वाऽनुजिघृक्षापरपरमशिवावेशोन्मीलित-महिमा स्वप्नोपलब्धोपदेशः श्री - जहां बोल्ड किया हैं वह व्याख्यान जैसा प्रतीत होता है। यह कविता नही है इस लिये छंद भी नही है।
संस्कृत को शारदा में लिप्यंतरण करने के कुछ नियम इस प्रकार है।
१. संस्कृत के व्साकरण का ज्ञान आवश्यक है | जैसे आप को ज्ञात है कि शारदा लिपि में लिखे गये मेन्सक्रिप्ट में कोई अतर व विराम नही। अंत तक नही होता है। इस कारण शब्दों व लेखन को आरंभ में विस्तारित करना पडता है।
२. संस्कृत शब्दों को पदम्, समस्तपदम् अनुस्वारः, विसर्गः, सन्धिः व विभक्तिः प्रत्ययः को अतर से भिन्न भिन्न करना चाहिये।
३. हर लेखन के अंत में विराम होना चाहिए। लेखन का कैसे समझा जाये इस के लिये छंद समझना आवश्यक है। संस्कृत में शलोक के अंत में अर्ध (।) विराम व पूर्ण विराम (॥) से चिंहित किया जाता है। अक्षर छंद के प्रति श्लोक चारों लाइन मे व हर लाइन में बराबर अक्षर रहते हैं। अर्ध विराम(।) दो लाइनों के बाद व पूर्ण विराम (॥) के अंत में लिखा जाता है।
साधार्णतः शलोकों को अनुष्टुब् छंद में लिखा जाता है जिस में ८ अक्षरों के चार लाइन होती हैं, इस प्रकार ३२ अक्षर होते हैं॥ यह कुछ लाइन मेरे गुरू ने मुझे छंदों के बारे में सिखायी थी। उनके शब्दों में यदा वृत्तानां लक्षणमधीयते प्रतिवृत्ते काचन गतिः भवति सा एव रागः(tune) इति कथ्यते। सामान्यतः तस्य अभ्यासं कुर्मः चेत् छन्दो-लक्षणं विना अपि यदा तत्र उच्चारणवेलायां सा गतिः अनुभूयते तया गत्या एव छन्दसः अभिज्ञानं कर्तुं शक्यते। तदा यत्र कुत्रापि मध्ये भङ्गः अस्ति चेत् छन्दोभङ्गः अस्ति इति ज्ञायते। यदा श्लोकस्य पठनसमये कश्चन दोषः अस्ति इति भासते तदा किमर्थं प्रस्तारं (लघु-गुरु) कृत्वा न पश्यामः ? तथा अपि उच्चारणवेलायां एव सा गतिः यत्र भिद्यते तत्र छन्दो भङ्गः अस्ति इति ज्ञायते। अतः छन्दस् शास्त्रस्य अभ्यासः करणीयः। शारदालिपिहस्तप्रतीनां लिप्यन्तरीकरणसमये छन्दोज्ञानस्य अन्वयः अवश्यं करणीयः।

continued..

छंदों की आकृति की जब हम समीक्षा करते हैं तो हर छंद को गाते समय एक अलग धुन सुनने को मिलती है। जब हम निरंतर अध्ययन करते हैं तो गाने की गति का ज्ञान होता है। क्योंकि अक्षरों व गण की संख्या अक्षरवृत में बराबर होती है। मात्रा की संक्षा भी मात्रावृत में बराबर रहती है। हम निरंतर अभ्यास से ही वृत्त को पहचान सकते हैं। वृत्त की पहचान से ही हम को ज्ञात होता है कि कोनसा अक्षर लिप्यंतरण के लिये उपयुक्त है। या तो हम इस को ठीक कर सकते हैं , या उस पृष्ट पर एकनोट लिख सकते हैं। ऐसी विभिन्नताओं को छन्दोभङ्गः या त्रुटियां कहते हैं।

राजतरंगिणी श्रीवरपंडित की लिखी –

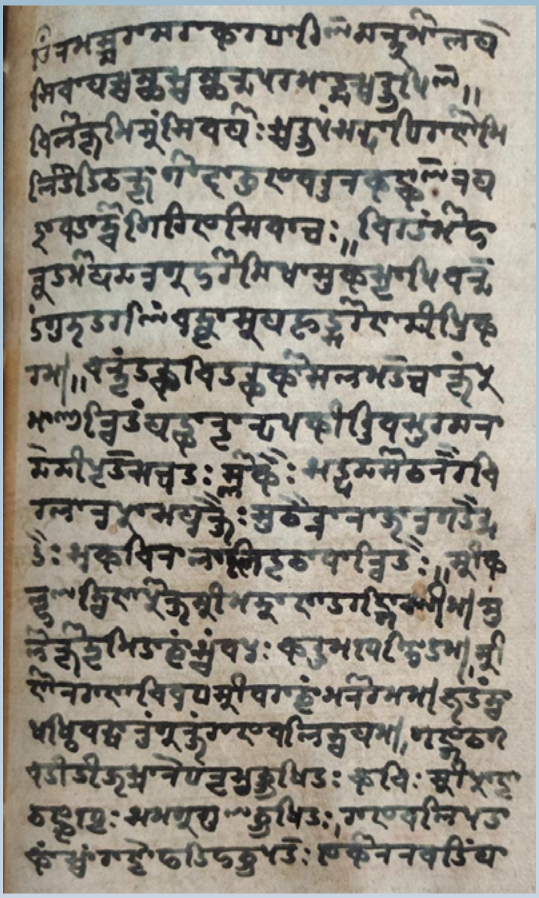

१. ॐ नमश्चराचराकारधारिणे चन्द्रमौलये।
२. शिवाय स्वच्छस्वच्छन्दपरमात्मस्वरूपिणे॥
३. विलोक्य मिश्रं शिवयोः स्वरूपं सर्पाधिराजो मि-
४. लितोऽतिभक्त्या। गौर्या भुजावर्तनकङ्कणेन य-
५. त्रावताद्वो गिरिजाशिवार्धः॥ *** विरतं मोहा-
६. न्धतमो यदनुग्रहरोचिषा शुकस्यापि। वन्दे
७. तं गुरुतरणिं बुद्ध्याश्रयहृत्सरोजदीप्तिक-
८. रम्॥ वन्द्यं तर्कवितर्ककौशलमतेर्वाक्यं प्र-
९. माणान्वितं यत्कान्त्या नृपकीर्तिवस्तुरचना
१०. देदीप्यते सर्वतः। श्लोकैः सत्पदशोभनैरवि-
११. रलानुप्रासयुक्तैः शुभैर्नानार्थानुगतैर्म-
१२. तैः सुकविना लालित्यभावान्वितैः॥ **** श्री क-
१३. ल्हणद्विजप्रोक्तश्रीमद्राजतरङ्गिणीम्। आ-
१४. लोक्योद्यमिताभ्यां स्वं वपुः कर्तुमखण्डितम्॥ श्री-
१५. जोनराजविबुधश्रीवराभ्यां मनोरमम्। कृतं द्वा-
१६.षष्ठिवर्षान्तं ग्रन्थं राजावलिद्वयम्॥ गङ्गाभग-
१७. वतीतीर्थस्नाने धन्यसुभूषितः। कविः श्री प्राज्य-
१८. भट्टाख्यः समग्रगुणभूषितः॥ राजावलिपता-
१९. कां स्वां राज्ये फतिहभूपतेः। एकोननवतिं या-
*** उपजाति
**** शार्दूलविक्रीडित

इस ग्रंथ में पहला वाक्य दूसरी लाइन में ही समाप्त होता है। लेकिन एसा ज़रूरी नही है कि ऐसा ही होगा।
हम इस ग्रंथ का लिप्यंतरण देखते हैं। दूसरी लाइन तक वाक्य में ३२ अक्षर हैं। इस में हमे १६ अक्षरों के बाद अर्ध विराम ओर पूर्ण विराम ३२अक्षरों के बाद देना है। यह अनुष्टुब छंद है। इस के उपरांत यह शलोक इस तरह बदलता है।

ॐ नमश्चराचराकारधारिणे चन्द्रमौलये।
शिवाय स्वच्छस्वच्छन्दपरमात्मस्वरूपिणे॥
विलोक्य मिश्रं शिवयोः स्वरूपं
सर्पाधिराजो मिलितोऽतिभक्त्या।
गौर्या भुजावर्तनकङ्कणेन
न यत्रावताद्वो गिरिजाशिवार्धः॥ * उपजाति
विरतं मोहान्धतमो यदनुग्रहरोचिषा शुकस्यापि।
वन्दे तं गुरुतरणिं बुद्ध्याश्रयहृत्सरोजदीप्तिकरम्॥
वन्द्यं तर्कवितर्ककौशलमतेर्वाक्यं प्रमाणान्वितं
यत्कान्त्या नृपकीर्तिवस्तुरचना देदीप्यते सर्वतः।
श्लोकैः सत्पदशोभनैरविरलानुप्रासयुक्तैः शुभै-
र्नानार्थानुगतैर्मतैः सुकविना लालित्यभावान्वितैः॥ ** शार्दूलविक्रीडित
श्री कल्हणद्विजप्रोक्तश्रीमद्राजतरङ्गिणीम्।
आलोक्योद्यमिताभ्यां स्वं वपुः कर्तुमखण्डितम्॥
श्रीजोनराजविबुधश्रीवराभ्यां मनोरमम्।
कृतं द्वाषष्ठिवर्षान्तं ग्रन्थं राजावलिद्वयम्॥
गङ्गाभगवतीतीर्थस्नाने धन्यसुभूषितः।
कविः श्री प्राज्यभट्टाख्यः समग्रगुणभूषितः॥ (अनुष्टुब् छन्दः)
राजावलिपताकां स्वां राज्ये फतिहभूपतेः।

continued..

एकोननवतिं या-

लिप्यंतरण मे अवग्रह चिंह पहचानना एक आवश्यक नियम है। कई ग्रंथों मे यह दिखाया भी जाता है जैसे कि नीचे ग्रंथ में दिखाया गया है।

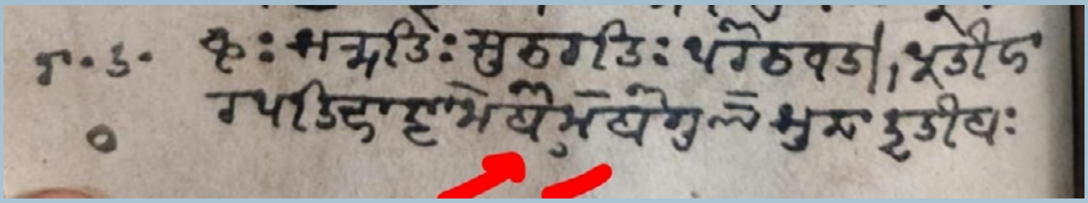

इस को सत्यापित करने के लिए मेयोऽमेयो के बीच लाल सियाही से दिखाया गया है। संस्कृतव्या-करण में एक नियम ऐसा है जिसे एङः पदान्तादति कहते हैं। इसे पाणिनि का अष्टाध्यायी सूत्रपात सूत्रक्रमांक ६.१.१०९ में समझाया है कि अवग्रह को कब और कैसे प्रयोग में लाया जाये। सभी ग्रंथों में यह चिंह लिखा होता है। अगर यह वास्तव में आवश्यक नही है। जब कि अवग्रह चिन्हित नही होता है जबकि आवश्यक है। उदाहरण आगे के ग्रंथ में दिखाया गया है।

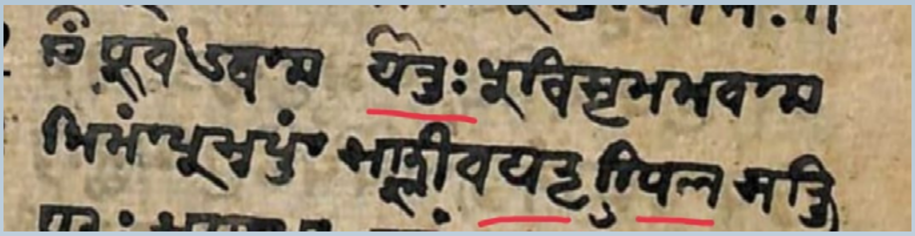

पहली लाइन में योऽन्तः के बीच अवग्रह पूर्वरूपसन्धिः के कारण आवश्यक है, पर नही लिखा है।दूसरी लाईन में शब्द सञ्जीवयत्यखिल मे त्य व खि के बीच दिखाया गया है जब कि आवश्यक नहीं है।

यहाँ यण् सन्धि होने के कारण नियमानुसार "इको यणचि" (सञ्जीवयति + अखिल = सञ्जीवयत्यख्ल)

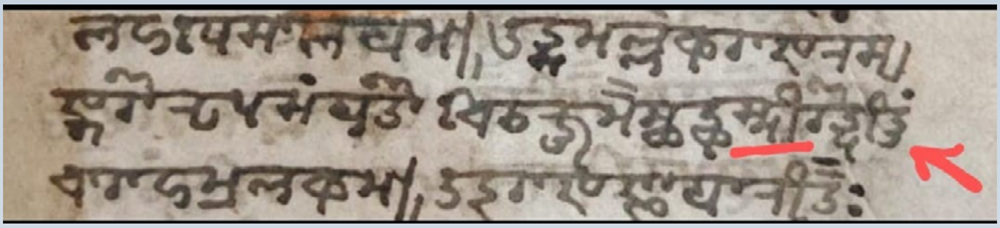

दूसरे ग्रंथ में चिन्हित किया गया शब्द विभक्तुमैच्छत्कश्मीरोत्पतिं = विभक्तुम् + ऐच्छत् + कशमीर + उत्पत्तिं। शब्द कश्मीरोत्पतिं = कश्मीर + उत्पत्तिं में अवग्रह (ऽ) नही है। यह गुणसन्धिः का एक उदाहरण है।

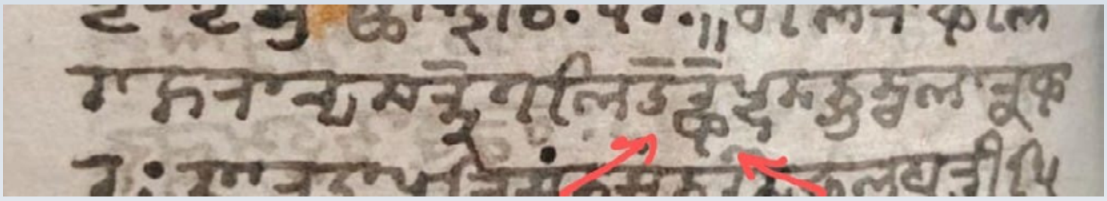

अंत के ग्रंथ में एक लाइन को जो चिन्हित किया गया है " राहुना नृचन्द्रे गलिते ऽ र्के ऽ प्युदभूद्बलान्धका को दो अवग्रहों कि आवश्यकता " र्के " के आगे व पीछे है क्योंकि यह गलिते अर्के अपि उदभूत् को अलग अलग करता है।

इसे यह प्रमाणित होता है कि शारदा लिपि के लिप्यंतरण के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान से लिप्यंतरण सटीक होता है। हर एक की लिखावट अलग-अलग होने के कारण निरंतरप्रयास आवश्यक है। शारदा लिपि को सफलता से समजने के लिये ग्रंथों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

By Master Zinda Kaul

Prèmúk Níshànû by Master Zinda Kaul

१. सॅमरन पनुन्य दिज़ेनम
प्रेमुक निशानु वेसिये।
रॅछरुन तोगुम नु रोवुम
ओसुम नु बानु वेसिये।।

२. पथ कालि छुम नु ह्युतमुत
सॅन मॅख्तु दान वेसिये।
अंन्य सार्य क्याह लबख वॅन्य
तिम मॅख्तु दानु व्येसिये।

३. वालिंजि मंज़ थवुन गोछ
हावुन थोवुम अथस पेठ।
राह कस छु कोर मे पानस
नॅकसान पानु व्येसिये।।

४. हावुन छु रावुरावुन
चावुक समर छु खामी।
थावान ज़ि छावु बापथ
बानन छि ठानु व्येसिये।।

५. यनु सुय निशानु रोवुम
तनु मंज़्र गॅयस तु फलवाह।
न्युन ह्योन नु कॅह तु फेरान
छस वानु वानु व्येसिये।।

६. वेसरुन पनुन वनस क्याह
वनुनस ति वार छुम नु।
बुथ मा सॅम्यम दॅहस थी
गछ़ु कोत शबान व्येसिये।।

७. यछ पछ मे हॉर ब्याखा
ह्यथ यूर्य वाति कांछा।
तस छा कमी निशानन
बर्य बर्य खज़ानु व्येसिये।।

८. डोलन कोहन वनन मंज़
शोलन छि गुलशनन मंज़।
ज़ोतन छि तारकन मंज़
कात्याह नाशानु व्येसिये।।

९. वेसुरिथ डॅलिथ पथर पेथ
बुथ क्याह दिमव तॅमिस निश।
पथ फेरुनुक्य पकन छा
यिथ्य ही बहानु व्येसिये।।

१०. मानव ज़ि अॅस्य हेमव पथ
छ़ोर्या तसुन्द मुहॅब्बत।
पैवंदु यि आदुनुक छा
शुर्य दोस्तानु व्येसिये।।

११.दिल फुटमत्यन सु तोशन
यछ गॅरिमत्यन छु रोशन।
गछ़ वॅरुमत्यन सुदामन
प्रछ गायिवानु व्येसिये।।

१२.अंन्द्य पॅक्य तॅती छु आसन
बॅदब्रोर सूरदासन।
बोज़ान छु माय लॉगिथ
लोलुक तरानु व्येसिये।

By Unknown

आदार ज़गतुक कुनुय छु / 𑆄𑆢𑆳𑆫 𑆘𑆓𑆠𑆶𑆑 𑆑𑆶𑆤𑆶𑆪 𑆗𑆶

आदार ज़गतुक कुनुय छु मंथुर शिवायि नमह ओम नमहशिवाये।
ही पंच नैनो ही आदि दीवो, जटा मुकुट गंडिथ च़े दीवो,
चंदुरअरदु शेखर त्रिलोचिनाये, शिवायि नमह ओम नमह शिवाये।
च़े नीलुकंठो जटन छय गंगा च़ु मूकशु दायुक गोसोन्य नंगा,
अलख अगोचर छपन गोफाये, , शिवायि नमह ओम नमह शिवाये।
बिहित छय गोरी सुत्य नालय वलिथ छुख सरपन हुंदुयदुशालय,
सहसरु सूरी छी च़े मंज़ जटाये , शिवायि नमह ओम नमह शिवाये।
अथस च़े डाबुर च़ु बीन वायान कपालु माला त्रिशूल दारान ,
बकत्यन तवय छुख दिवान यछाये, रटिथ च़ु अंकुश खडखदारिथ,
दनुरदरन मंज़ पिनाक चारिथ वोदनी बु दंडवत करयवोमाये
शिवायि नमह ओम नमह शिवाये।
अनाथ बंदू दयायि सागर संसारु की दॅख मे यिम छी तिम च़ठ,
जगतस दया कर च़ु हेथ वोमाये, शिवायि नमह ओम नमहशिवाये।

𑆄𑆢𑆳𑆫 𑆘𑆓𑆠𑆶𑆑 𑆑𑆶𑆤𑆶𑆪 𑆗𑆶 𑆩𑆁𑆡𑆶𑆫 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅
𑆲𑆵 𑆥𑆁𑆖 𑆤𑆽𑆤𑆾 𑆲𑆵 𑆄𑆢𑆴 𑆢𑆵𑆮𑆾, 𑆘𑆛𑆳 𑆩𑆶𑆑𑆶𑆛 𑆓𑆁𑆝𑆴𑆡 𑆖𑆼 𑆢𑆵𑆮𑆾,
𑆖𑆁𑆢𑆶𑆫𑆃𑆫𑆢𑆶 𑆯𑆼𑆒𑆫 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆬𑆾𑆖𑆴𑆤𑆳𑆪𑆼, 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅
𑆖𑆼 𑆤𑆵𑆬𑆶𑆑𑆁𑆜𑆾 𑆘𑆛𑆤 𑆗𑆪 𑆓𑆁𑆓𑆳 𑆖𑆶 𑆩𑆷𑆑𑆯𑆶 𑆢𑆳𑆪𑆶𑆑 𑆓𑆾𑆱𑆾𑆤𑇀𑆪 𑆤𑆁𑆓𑆳,
𑆃𑆬𑆒 𑆃𑆓𑆾𑆖𑆫 𑆗𑆥𑆤 𑆓𑆾𑆦𑆳𑆪𑆼, , 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅
𑆧𑆴𑆲𑆴𑆠 𑆗𑆪 𑆓𑆾𑆫𑆵 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆤𑆳𑆬𑆪 𑆮𑆬𑆴𑆡 𑆗𑆶𑆒 𑆱𑆫𑆥𑆤 𑆲𑆶𑆁𑆢𑆶𑆪𑆢𑆶𑆯𑆳𑆬𑆪,
𑆱𑆲𑆱𑆫𑆶 𑆱𑆷𑆫𑆵 𑆗𑆵 𑆖𑆼 𑆩𑆁𑆘 𑆘𑆛𑆳𑆪𑆼 , 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅
𑆃𑆡𑆱 𑆖𑆼 𑆝𑆳𑆧𑆶𑆫 𑆖𑆶 𑆧𑆵𑆤 𑆮𑆳𑆪𑆳𑆤 𑆑𑆥𑆳𑆬𑆶 𑆩𑆳𑆬𑆳 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆯𑆷𑆬 𑆢𑆳𑆫𑆳𑆤 ,
𑆧𑆑𑆠𑇀𑆪𑆤 𑆠𑆮𑆪 𑆗𑆶𑆒 𑆢𑆴𑆮𑆳𑆤 𑆪𑆗𑆳𑆪𑆼, 𑆫𑆛𑆴𑆡 𑆖𑆶 𑆃𑆁𑆑𑆶𑆯 𑆒𑆝𑆒𑆢𑆳𑆫𑆴𑆡,
𑆢𑆤𑆶𑆫𑆢𑆫𑆤 𑆩𑆁𑆘 𑆥𑆴𑆤𑆳𑆑 𑆖𑆳𑆫𑆴𑆡 𑆮𑆾𑆢𑆤𑆵 𑆧𑆶 𑆢𑆁𑆝𑆮𑆠 𑆑𑆫𑆪𑆮𑆾𑆩𑆳𑆪𑆼
𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅
𑆃𑆤𑆳𑆡 𑆧𑆁𑆢𑆷 𑆢𑆪𑆳𑆪𑆴 𑆱𑆳𑆓𑆫 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆶 𑆑𑆵 𑆢𑆒 𑆩𑆼 𑆪𑆴𑆩 𑆗𑆵 𑆠𑆴𑆩 𑆖𑆜,
𑆘𑆓𑆠𑆱 𑆢𑆪𑆳 𑆑𑆫 𑆖𑆶 𑆲𑆼𑆡 𑆮𑆾𑆩𑆳𑆪𑆼, 𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆩𑆲 𑆏𑆩 𑆤𑆩𑆲𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪𑆼𑇅

CST Navratri Greeting on Social Media

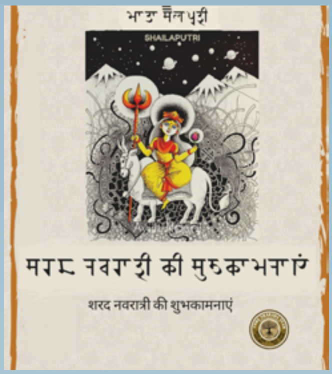

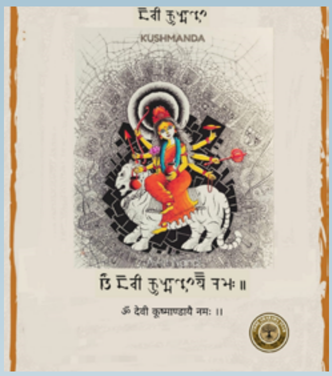

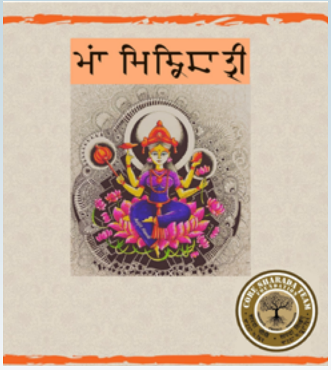

By Kumuda Hegde

भारतीय प्राचीन लिपयः/ 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆬𑆴𑆥𑆪𑆂

(continued from previous edition)

ब्राह्मी

तत्रादौ प्रायः सर्वासां भारतीयलिपीनां कासाञ्चन वैदेशिकलिपीनां च जननीत्वेन ज्ञेयमानां ब्राह्मीलिपिं पश्यामः। ब्राह्मी खरोष्ठी इत्युभे भारतस्य प्राचीनतमे लिप्यौ। सिन्धूनागरिकताकालिका लिपिरेका दृष्टा, या अद्यावधि अनभिज्ञाता। तदुत्तरकालिका ब्राह्मी जेम्स् प्रिन्सेप् महाभागेन अभिज्ञातमित्युच्यते। ब्राह्मीलिपिः धम्मलिपिः, बम्भीलिपिः इत्यादि नामभिः विश्रुता। इयं लिपिः प्राचीनभारते, दक्षिणएशिया एवं मध्यएशिया प्रान्ते च दृष्टा। मौर्यवंशियराज्ञा अशोकेन स्वीयशासनेषु प्रचुरतया ब्राह्मी उपयुक्ता उपलभ्यते। एतानि क्रि.पू. तृतीयशतमाने लिखितानि शासनानि। तदुत्तरं पञ्चमशतमानकाले एषा लिपिः चतुश्शतोत्तर-एकसहस्रवर्षपर्यन्तमज्ञातरूपेणैवासीत्। ततः षड्-त्रिंशदुत्तर-अष्टादशशततमे वर्षे ग्रीक्-बाह्मी नाणके उपलब्धा।

जैन-बौद्धलेखेषु ब्राह्मीलिपिः बहुधा दृश्यते।

• पञ्चमशतके ललितविस्तरसूत्रे सिद्धार्थः नाम गौतमबुद्धः ब्राह्मीलिपिं अन्याः लिप्यश्च गुरोः अधीतवानिति लिखितं लभ्यते।

• द्वितीयशतके पन्नवणसूत्रे, तृतीयशतके समवायाङ्गसूत्रे च लभ्यमानासु बहुषु लिपिषु ब्राह्मी अन्यतमा।

• जैनव्याख्या प्रग्याप्तिसूत्रे महावीरात् पूर्वकालिकाः अष्टादशलिप्यः लभ्यन्ते यासु ब्राह्मी आद्या।

• लिपिसालसन्दर्शनपरिवर्ते विद्यमानासु चतुष्षष्टिलिपिषु आद्या ब्राह्मी एव।

• कन्नडकविना पम्पेन लिखिते आदिपुराणे जैनतीर्थङ्करः वृषभदेवः स्वपुत्रे ब्राह्मीलिपिमशिक्षयदिति लिखितं दृश्यते।

कथं “ब्राह्मी” इति नाम आगतमित्यस्य वैदिकपरम्परायां “ब्रह्मणा रचिता ब्राह्मी” इत्युक्तमिति ज्ञायते। जैनतत्त्वज्ञाः तेषां प्रथमतीर्थङ्करेण वृषभदेवेन स्वपुत्र्यै ब्राह्म्यै शिक्षिता लिपिरेषा इति लिपिरपि ब्राह्मी इति मन्यन्ते। अस्याः लिप्याः ज्ञानात्प्राक् इयं “पिनमन”लिपिः इति सम्बोधिता। ततः जोर्ज् बुह्लर् महाभागः स्वीये कृतौ “On the origin of the Indian Brahma alphabet” इत्यत्र पञ्चनवत्युत्तर-अष्टादशशततमे वर्षे ब्राह्मी लिपिः ब्राह्मणविद्भिः आविष्कृत्य ब्रह्मलिपिः इति नामकरणं कृतमित्यलिखत्।

ततः अस्माभिः ब्राह्मीलिप्याः प्रकाराः दृष्टव्याः। अशोकेन तृतीयशतके प्रयुक्ता अशोकन्/मौर्यन् ब्राह्मी इति प्रथमप्रकारिका। तदुत्तरं चतुर्थशतके गुप्तकालिकब्राह्मी। ततः तेलुगुप्रभावे आगता बट्टिप्रोलु प्रकारः यश्च दक्षिणभारते बौद्धलेखेषु लभ्यते। ततः तमिलुनाडु-केरल-श्रीलङ्का प्रान्तेषु प्रयुक्ता तमिलु-ब्राह्मी इति ज्ञाता। एवं प्रकाराः उपलब्धाः।

इत्थञ्च कदा इयं लिपिः ज्ञाता? केन वा आदौ ज्ञातम्? इति चेत् – इण्डो ग्रीक् राज्ञः अग्याफक्लीस् काले चालिते ग्रीक्-ब्राह्मी नाणके एषा लिपिः प्राप्ता, यस्याः ज्ञाने प्रयत्नोऽपि विहितः। षड्-त्रिंशदुत्तर-अष्टादशशततमे वर्षे नोर्वे देशीयः विद्वान् क्रिस्टीन् लासन् बहूनामक्षराणां ज्ञाने यशः अप्राप्नोत्। तदुत्तरमीस्ट् इण्डिया संस्थायां विद्यमानं पुरातत्त्वज्ञः जेम्स् प्रिन्सेप् महाशयः अलेक्साण्डर् कन्निंगं महाभागेन सह मिलित्वा सर्वाणि अक्षराणि अभ्यजानात्। तच्च एशियाटिक् सोसैटि पत्रिकायां मार्च् मासे अष्टात्रिंशदुत्तर-अष्टादशशततमे वर्षे प्रकटितम्। लिपिरेषा शासनेषु, गुहासु, शिलासु, स्तूपेषु, स्तम्भेषु, गजदन्तेषु, क्वचिदस्थिषु, मृद्भटेषु, पात्रेषु, नाणकेषु च प्राप्ता।

𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵

𑆠𑆠𑇀𑆫𑆳𑆢𑆿 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆱𑆳𑆁 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪𑆬𑆴𑆥𑆵𑆤𑆳𑆁 𑆑𑆳𑆱𑆳𑆚𑇀𑆖𑆤 𑆮𑆽𑆢𑆼𑆯𑆴𑆑𑆬𑆴𑆥𑆵𑆤𑆳𑆁 𑆖 𑆘𑆤𑆤𑆵𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆘𑇀𑆚𑆼𑆪𑆩𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆁 𑆥𑆯𑇀𑆪𑆳𑆩𑆂𑇅 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆒𑆫𑆾𑆰𑇀𑆜𑆵 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆶𑆨𑆼 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆠𑆩𑆼 𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆿𑇅 𑆱𑆴𑆤𑇀𑆣𑆷𑆤𑆳𑆓𑆫𑆴𑆑𑆠𑆳𑆑𑆳𑆬𑆴𑆑𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆼𑆑𑆳 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆳, 𑆪𑆳 𑆃𑆢𑇀𑆪𑆳𑆮𑆣𑆴 𑆃𑆤𑆨𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆳𑇅 𑆠𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆑𑆳𑆬𑆴𑆑𑆳 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆘𑆼𑆩𑇀𑆱𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆴𑆤𑇀𑆱𑆼𑆥𑇀 𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆓𑆼𑆤 𑆃𑆨𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆩𑆴𑆠𑇀𑆪𑆶𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆣𑆩𑇀𑆩𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂, 𑆧𑆩𑇀𑆨𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆤𑆳𑆩𑆨𑆴𑆂 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆳𑇅 𑆅𑆪𑆁 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆨𑆳𑆫𑆠𑆼, 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟𑆍𑆯𑆴𑆪𑆳 𑆍𑆮𑆁 𑆩𑆣𑇀𑆪𑆍𑆯𑆴𑆪𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆖 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆳𑇅 𑆩𑆿𑆫𑇀𑆪𑆮𑆁𑆯𑆴𑆪𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆳 𑆃𑆯𑆾𑆑𑆼𑆤 𑆱𑇀𑆮𑆵𑆪𑆯𑆳𑆱𑆤𑆼𑆰𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆖𑆶𑆫𑆠𑆪𑆳 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆇𑆥𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳 𑆇𑆥𑆬𑆨𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆍𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆑𑇀𑆫𑆴.𑆥𑆷. 𑆠𑆸𑆠𑆵𑆪𑆯𑆠𑆩𑆳𑆤𑆼 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆯𑆳𑆱𑆤𑆳𑆤𑆴𑇅 𑆠𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆁 𑆥𑆚𑇀𑆖𑆩𑆯𑆠𑆩𑆳𑆤𑆑𑆳𑆬𑆼 𑆍𑆰𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆖𑆠𑆶𑆯𑇀𑆯𑆠𑆾𑆠𑇀𑆠𑆫-𑆍𑆑𑆱𑆲𑆱𑇀𑆫𑆮𑆫𑇀𑆰𑆥𑆫𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆩𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆫𑆷𑆥𑆼𑆟𑆽𑆮𑆳𑆱𑆵𑆠𑇀𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆰𑆝𑇀-𑆠𑇀𑆫𑆴𑆁𑆯𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫-𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆢𑆯𑆯𑆠𑆠𑆩𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆓𑇀𑆫𑆵𑆑𑇀-𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆤𑆳𑆟𑆑𑆼 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣𑆳𑇅

𑆘𑆽𑆤-𑆧𑆿𑆢𑇀𑆣𑆬𑆼𑆒𑆼𑆰𑆶 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆧𑆲𑆶𑆣𑆳 𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

*𑆥𑆚𑇀𑆖𑆩𑆯𑆠𑆑𑆼 𑆬𑆬𑆴𑆠𑆮𑆴𑆱𑇀𑆠𑆫𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆫𑇀𑆡𑆂 𑆤𑆳𑆩 𑆓𑆿𑆠𑆩𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑆂 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆁 𑆃𑆤𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆯𑇀𑆖 𑆓𑆶𑆫𑆾𑆂 𑆃𑆣𑆵𑆠𑆮𑆳𑆤𑆴𑆠𑆴 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆁 𑆬𑆨𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

*𑆢𑇀𑆮𑆴𑆠𑆵𑆪𑆯𑆠𑆑𑆼 𑆥𑆤𑇀𑆤𑆮𑆟𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆼, 𑆠𑆸𑆠𑆵𑆪𑆯𑆠𑆑𑆼 𑆱𑆩𑆮𑆳𑆪𑆳𑆕𑇀𑆓𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆖 𑆬𑆨𑇀𑆪𑆩𑆳𑆤𑆳𑆱𑆶 𑆧𑆲𑆶𑆰𑆶 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆰𑆶 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆃𑆤𑇀𑆪𑆠𑆩𑆳𑇅

*𑆘𑆽𑆤𑆮𑇀𑆪𑆳𑆒𑇀𑆪𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆓𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠𑆴𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆩𑆲𑆳𑆮𑆵𑆫𑆳𑆠𑇀 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆮𑆑𑆳𑆬𑆴𑆑𑆳𑆂 𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆢𑆯𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆂 𑆬𑆨𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆪𑆳𑆱𑆶 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆄𑆢𑇀𑆪𑆳𑇅

*𑆬𑆴𑆥𑆴𑆱𑆳𑆬𑆱𑆤𑇀𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆥𑆫𑆴𑆮𑆫𑇀𑆠𑆼 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆩𑆳𑆤𑆳𑆱𑆶 𑆖𑆠𑆶𑆰𑇀𑆰𑆰𑇀𑆜𑆴𑆬𑆴𑆥𑆴𑆰𑆶 𑆄𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆍𑆮𑇅

𑆑𑆤𑇀𑆤𑆝𑆑𑆮𑆴𑆤𑆳 𑆥𑆩𑇀𑆥𑆼𑆤 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆼 𑆄𑆢𑆴𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟𑆼 𑆘𑆽𑆤𑆠𑆵𑆫𑇀𑆡𑆕𑇀𑆑𑆫𑆂 𑆮𑆸𑆰𑆨𑆢𑆼𑆮𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆥𑆶𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑆴𑆩𑆯𑆴𑆑𑇀𑆰𑆪𑆢𑆴𑆠𑆴 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆁 𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆑𑆡𑆁 “𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵” 𑆅𑆠𑆴 𑆤𑆳𑆩 𑆄𑆓𑆠𑆩𑆴𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆮𑆽𑆢𑆴𑆑𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳𑆪𑆳𑆁 “𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆟𑆳 𑆫𑆖𑆴𑆠𑆳 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵” 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆘𑆽𑆤𑆠𑆠𑇀𑆮𑆘𑇀𑆚𑆳𑆂 𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆠𑆵𑆫𑇀𑆡𑆕𑇀𑆑𑆫𑆼𑆟 𑆮𑆸𑆰𑆨𑆢𑆼𑆮𑆼𑆤 𑆱𑇀𑆮𑆥𑆶𑆠𑇀𑆫𑇀𑆪𑆽 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑇀𑆪𑆽 𑆯𑆴𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆼𑆰𑆳 𑆅𑆠𑆴 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆥𑆴 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆅𑆠𑆴 𑆩𑆤𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼𑇅 𑆃𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆳𑆠𑇀𑆥𑇀𑆫𑆳𑆑𑇀 𑆅𑆪𑆁 “𑆥𑆴𑆤𑆩𑆤”𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆅𑆠𑆴 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆾𑆣𑆴𑆠𑆳𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆘𑆾𑆫𑇀𑆘𑇀 𑆧𑆶𑆲𑇀𑆬𑆫𑇀 𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆓𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆵𑆪𑆼 𑆑𑆸𑆠𑆿 “On the origin of the Indian Brahma alphabet” 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆠𑇀𑆫 𑆥𑆚𑇀𑆖𑆤𑆮𑆠𑇀𑆪𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫-𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆢𑆯𑆯𑆠𑆠𑆩𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆟𑆮𑆴𑆢𑇀𑆨𑆴𑆂 𑆄𑆮𑆴𑆰𑇀𑆑𑆸𑆠𑇀𑆪 𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆅𑆠𑆴 𑆤𑆳𑆩𑆑𑆫𑆟𑆁 𑆑𑆸𑆠𑆩𑆴𑆠𑇀𑆪𑆬𑆴𑆒𑆠𑇀𑇅

𑆠𑆠𑆂 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆳𑆨𑆴𑆂 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫𑆳𑆂 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆮𑇀𑆪𑆳𑆂𑇅 𑆃𑆯𑆾𑆑𑆼𑆤 𑆠𑆸𑆠𑆵𑆪𑆯𑆠𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳 𑆃𑆯𑆾𑆑𑆤𑇀/𑆩𑆿𑆫𑇀𑆪𑆤𑇀 𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆅𑆠𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫𑆴𑆑𑆳𑇅 𑆠𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆁 𑆖𑆠𑆶𑆫𑇀𑆡𑆯𑆠𑆑𑆼 𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠𑆑𑆳𑆬𑆴𑆑𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆠𑆼𑆬𑆶𑆓𑆶𑆥𑇀𑆫𑆨𑆳𑆮𑆼 𑆄𑆓𑆠𑆳 𑆧𑆛𑇀𑆛𑆴𑆥𑇀𑆫𑆾𑆬𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫𑆂 𑆪𑆯𑇀𑆖 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟𑆨𑆳𑆫𑆠𑆼 𑆧𑆿𑆢𑇀𑆣𑆬𑆼𑆒𑆼𑆰𑆶 𑆬𑆨𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆠𑆩𑆴𑆬𑆶𑆤𑆳𑆝𑆶-𑆑𑆼𑆫𑆬-𑆯𑇀𑆫𑆵𑆬𑆕𑇀𑆑𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼𑆰𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳 𑆠𑆩𑆴𑆬𑆶-𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆅𑆠𑆴 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆳𑇅 𑆍𑆮𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫𑆳𑆂 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣𑆳𑆂𑇅

𑆅𑆠𑇀𑆡𑆚𑇀𑆖 𑆑𑆢𑆳 𑆅𑆪𑆁 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆳? 𑆑𑆼𑆤 𑆮𑆳 𑆄𑆢𑆿 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆩𑇀? 𑆅𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆠𑇀 – 𑆅𑆟𑇀𑆝𑆾 𑆓𑇀𑆫𑆵𑆑𑇀 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆃𑆓𑇀𑆪𑆳𑆦𑆑𑇀𑆬𑆵𑆱𑇀 𑆑𑆳𑆬𑆼 𑆖𑆳𑆬𑆴𑆠𑆼 𑆓𑇀𑆫𑆵𑆑𑇀-𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆵 𑆤𑆳𑆟𑆑𑆼 𑆍𑆰𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑆳, 𑆪𑆱𑇀𑆪𑆳𑆂 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆠𑇀𑆤𑆾𑇁𑆥𑆴 𑆮𑆴𑆲𑆴𑆠𑆂𑇅 𑆰𑆝𑇀-𑆠𑇀𑆫𑆴𑆁𑆯𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫-𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆢𑆯𑆯𑆠𑆠𑆩𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆤𑆾𑆫𑇀𑆮𑆼 𑆢𑆼𑆯𑆵𑆪𑆂 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆱𑇀𑆛𑆵𑆤𑇀 𑆬𑆳𑆱𑆤𑇀 𑆧𑆲𑆷𑆤𑆳𑆩𑆑𑇀𑆰𑆫𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆼 𑆪𑆯𑆂 𑆃𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆤𑆾𑆠𑇀𑇅 𑆠𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆩𑆵𑆱𑇀𑆛𑇀 𑆅𑆟𑇀𑆝𑆴𑆪𑆳 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆡𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆩𑆳𑆤𑆁 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆠𑆠𑇀𑆮𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆘𑆼𑆩𑇀𑆱𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆴𑆤𑇀𑆱𑆼𑆥𑇀 𑆩𑆲𑆳𑆯𑆪𑆂 𑆃𑆬𑆼𑆑𑇀𑆱𑆳𑆟𑇀𑆝𑆫𑇀 𑆑𑆤𑇀𑆤𑆴𑆁𑆓𑆁 𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆓𑆼𑆤 𑆱𑆲 𑆩𑆴𑆬𑆴𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆟𑆴 𑆃𑆑𑇀𑆰𑆫𑆳𑆟𑆴 𑆃𑆨𑇀𑆪𑆘𑆳𑆤𑆳𑆠𑇀𑇅 𑆠𑆖𑇀𑆖 𑆍𑆯𑆴𑆪𑆳𑆛𑆴𑆑𑇀 𑆱𑆾𑆱𑆽𑆛𑆴 𑆥𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆖𑇀 𑆩𑆳𑆱𑆼 𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆁𑆯𑆢𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫-𑆃𑆰𑇀𑆛𑆳𑆢𑆯𑆯𑆠𑆠𑆩𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆛𑆴𑆠𑆩𑇀𑇅 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆼𑆰𑆳 𑆯𑆳𑆱𑆤𑆼𑆰𑆶, 𑆓𑆶𑆲𑆳𑆱𑆶, 𑆯𑆴𑆬𑆳𑆱𑆶, 𑆱𑇀𑆠𑆷𑆥𑆼𑆰𑆶, 𑆱𑇀𑆠𑆩𑇀𑆨𑆼𑆰𑆶, 𑆓𑆘𑆢𑆤𑇀𑆠𑆼𑆰𑆶, 𑆑𑇀𑆮𑆖𑆴𑆢𑆱𑇀𑆡𑆴𑆰𑆶, 𑆩𑆸𑆢𑇀𑆨𑆛𑆼𑆰𑆶, 𑆥𑆳𑆠𑇀𑆫𑆼𑆰𑆶, 𑆤𑆳𑆟𑆑𑆼𑆰𑆶 𑆖 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑆳𑇅

By CST

Activity Cart Of Previous Months

- **CST Opens Doors for New Opportunities**

Core Sharada Team foundation is working towards generating some employment and as a first Core Sharada team foundation has hired teachers and will be paid a nominal honorarium to facilitate our training programs, scheduled and conducted every quarter. Till date these training programs were conducted by CST volunteers without any honorarium.

- **Conference on Kashmir- the cultural epicenter of Bharat by Indica courses**

Among the various cultures and thought centres that have impacted Bharat, Kashmir has been one of the few most creative. Various poets from ancient and medieval India mention Kashmir / Sharada Peetha as the yearned destination for acquiring / enhancing knowledge. Sharada lipi (script) of Kashmir which finds the mention in Adishankaracharya 's Saundarya Lahiri and Abninavgupta's works, was used to preserve ancient knowledge. To keep this legacy alive, Core Sharada Team foundation has built a strong structure. In this context, Rakesh Koul from CST had been invited as a Guest speaker during the online conference organised by Indica courses recently. Among other speakers and eminent scholars who participated include Prof Subhash Kak, Dr Nagraj Paturi and Dr Padmini Balaram. Rakesh Koul presented the work done by the CST foundation in the last eight years to propagate and promote Sharada Lipi on various platforms. The highlights included publications, books, digitization, research etc. The presentation and the work being done by CST foundation was luaded by one and all.

- **Academic Karma webinar held on 1st October'22**

Under VedaVyaas Restructuring Sanskrit Scheme many reputed Uuniversities like Amity University, Delhi, SD Education Board, Delhi etc, organized a National Webinar on the Topic -***शारदा लिपि के पुनरुद्धार की प्रासंगिकता एवम् प्रयास,*** (Relevance and efforts on Revival of Script (Lipi)Sharada) in which 49 participants from various states and Institutions participated and

Exchanged their thoughts on the history, culture, art and Sharda script. Miss Veronica Peer, Director, Core Sharda Team Foundation, presented the facts about this script in a crisp presentation. Talk included multiple dimensional issues related to the promotion of Sharada Lipi. It was followed by question / answer session in which Dr. Anand Gurhye, Dr Avinash Chandra, Dr. Chanchal, Dr Rakesh Koul & others participated with keenness and made several enquires. They also had useful suggestions on popularising Sharada Lipi, which was almost on the verge of extinction due to many socio - political reasons. At the end Dr. Virender Kumar, Head, Department of Sanskrit, Punjabi University, Patiala in his presidential address specifically lauded the work done / being done by Core Sharda Team and made scholarly remarks on the issue of promotion of Sharda lipi. The workshop was concluded by Dr C K Jha, Convener & Head Dept of Skt, MPN College, Mullana who also proposed the Vote of Thanks.

By Rakesh Kaul

Brief overview of the History of Sharada Script

Sharada Lipi traces back to 3rd CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3rd CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8th and 12th century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.

परमार्थचर्चा / 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆫𑇀𑆡𑆖𑆫𑇀𑆖𑆳

By Lokesh Sharma

यह परमार्थचर्चा नामक स्तोत्र श्रीमन्महामाहेश्वर-अभिनवगुप्तपादाचर्य द्वारा रचित है। इसमें बहुत ही कम शब्दों में उस अचिन्त्य परमशिव का वर्णन है जो विश्वमय (विश्व के रूप में स्थित) होने के साथ-साथ विश्वोत्तीर्ण (विश्व से परे) भी है। वह परम शिव परमार्थ होने के कारण इसका नाम परमार्थचर्चा है। परमशिव का स्वभाव स्वयंप्रकाश विमर्शात्मक स्वातन्त्र्य है जिससे वह निरन्तर विश्व की सृष्टि, स्थिति, संहार, अपने स्वरूप का तिरोभाव और अनुग्रह रूप कार्य करता है।

अर्केन्दुदीपाद्यवभासभिन्नं नाभात्यतिव्याप्ततया ततश्च ।
प्रकाशरूपं तदियत् प्रकाश्यप्रकाशताख्या व्यवहार एव ॥ १॥

सूर्य, चन्द्र और दीप ये तीनों प्रकाश से भिन्न कुछ और नहीं दिखाई देते, तीनों प्रकाश से व्याप्त होने के कारण। इतने प्रकाश को सूर्य की संज्ञा, इतने प्रकाश को दीप की संज्ञा दी जाती है। यह कवल व्यवहारमात्र है वास्तव में तीनों प्रकाशरूप ही हैं ॥१॥

ज्ञानाद्विभिन्नो न हि कश्चिदर्थः तत्तत्कृतः संविदि नास्ति भेदः ।
स्वयंप्रकाशाच्छतमैकधाम्नि प्रातिस्विकी नापि विभेदिता स्यात् ॥२॥

उसी प्रकार ज्ञान से भिन्न कोई अन्य प्रदार्थ नहीं है। जो तरह-तरह का भेद दिखाई पडता है वह संवित् (ज्ञानमात्र) में नहीं है। उस स्वयं प्रकाशमान एकरूपी अतिस्वच्छ संवित् प्रकाश में थोडी सी भी भेद की कल्पना नहीं की जा सकती ॥२॥

इत्थं स्वसंविद्घन एक एव शिवः स विश्वस्य परः प्रकाशः।
तत्रापि भात्येव विचित्रशक्तौ ग्राह्यगृहीतृप्रविभागभेदः ॥३॥

इस प्रकार एक संविन्मय (ज्ञानमात्र) शिव ही विश्व का प्रकाश (सार) है। उसी की विचित्रशक्ति में यह ग्राह्य-ग्राहक (वेद्य-वेदक) भेद भासित होता है (परमार्थतः नहीं है)॥३॥

भेदः स चायं न ततो विभिन्नः स्वच्छन्दसुस्वच्छतमैकधाम्नः।
प्रासादहस्त्यश्वपयोदसिन्धुगिर्यादि यद्वन्मणिदर्पणादेः ॥ ४॥

यह जो ग्राह्य-ग्राहक भेद है वह इस पूर्णतः स्वतन्त्र स्वच्छ एकप्रकाशरूप संवित् (शिव) से भिन्न नहीं है। जिस प्रकार दर्पण में दिखने वाले नाना प्रदार्थ जैसे कि महल, हाथी, घोडा, मेघ, सागर, पर्वत इत्यादि दर्पण से भिन्न नहीं है ॥४॥

आदर्शकुक्षौ प्रतिबिम्बकारि सबिम्बकं स्याद्यदि मानसिद्धम् ।
स्वच्छन्दसंविन्मुकुरान्तराले भावेषु हेत्वन्तरमस्ति नान्यत् ॥ ५॥

अब यदि एसा कहा जाए की दर्पण को तो प्रतिबिन्ब दिखाने के लिए आगे पडी वस्तु की आवश्यकता होती है तो संवित् नामक अत्यन्त निर्मल दर्पण में प्रतिबिम्ब का क्या कारण है तो इस पर कहा जाता है कि संवित् में दृश्यमान जगत् प्रतिबिम्ब का कारण कुछ बाहर नहीं है अपितु संवित् स्वयं ही कारण है क्योंकि वह स्वतन्त्र है ॥५॥

संविद्घनस्तेन परस्त्वमेव त्वय्येव विश्वानि चकासति द्राक् ।
स्फुरन्ति च त्वन्महसः प्रभावात् त्वमेव चैषां परमेशकर्ता ॥ ६॥

इसी कारण वह संविद्घन (चिन्मात्र) तुम ही हो। तुममें ही विश्व प्रकाशते हैं एक ही पल में। तुम्हारे ही तेज से वे स्फुरित होते हैं। तथा तुम ही इन विश्वों के परमेश्वर और कर्ता हो ॥६॥

इत्थं स्वसंवेदनमादिसिद्धमसाध्यमात्मानमनीशमीशम् ।
स्वशक्तिसम्पूर्णमदेशकालं नित्यं विभुं भैरवनाथमीडे ॥ ७॥

उस स्वयं प्रकाशित असाध्य (जिसे पाया नहीं जा सकता) आदिसिद्ध (जो पहले से ही प्राप्त है) आत्मा को, जो सबका नियन्ता है, जिसके ऊपर कोई और नियन्ता नहीं है, जो अपनी ही शक्ति से संपूर्णता को प्राप्त है, जो देश-काल से निर्लिप्त है, जो नित्य है, उस सर्वव्याप्य भैरवनाथ को मैं प्रणाम करता हूँ ॥७॥

सद्वृत्तसप्तकमिदं गलितान्यचिन्ताः
सम्यक् स्मरन्ति हृदये परमार्थकामाः ।
ते भैरवीयपरधाम मुहुर्विशन्ति
जानन्ति च त्रिजगतीपरमार्थचर्चाम् ॥ ८॥

इन सारयुक्त सातश्लोकों कों परमार्थ की कामना करने वाले सज्जन, अन्य चिन्ताओं का सर्वथा त्यागकर अच्छी प्रकार से हृदय में ध्यान करते हैं। वे सज्जन इस त्रिजगत् के परमार्थसत्य को जानते हैं और विना विलम्ब के उसी क्षण भैरव के परमधाम में प्रवेश करते हैं ॥८॥

By Jyotsna Subba

श्रीशङ्कराचार्यरचित गुर्वष्टकम्/

गुर्वष्टकम् आदिगुरू श्रीशङ्कराचार्य द्वारा संस्कृत में रचित् आठ पङ्क्तिका अवर्णणीय गुरुभक्ति भाव का कृति है। उन्होंने यह अति सारगर्भित संरचना भुजङ्गप्रयात् छन्दमें रचना कीये हैं। इस छन्दमें प्रत्येक पङ्क्ति चार पाद, और प्रत्येक पादमे बारह अक्षर होते हैं। ये बारह अक्षरों चार गण मे विभाजित हैं। यहां प्रत्येक गण समान हैं- (‘य’- गण) । तीन् अक्षरों का समन्वयसे ‘य’-गण बनता है। इस् गण मे प्रथम वर्ण लघु (I) एवं द्वितीय तथा तृतीय वर्ण गुरु (S) होते हैं। अतः इस गणका लक्षण होता है:-

। ऽ ऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ- १म पाद
।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ- २य पाद
।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ- ३य पाद
।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ- ४र्थ पाद

(जैसे पहले सूचित किया गया हे, यहां ‘।’ का मतलव ‘लघु’ और ‘ऽ’ का मतलव ‘गुरु’ है।)

गुर्वष्टकम्-का आठ पन्तियों मे से मैं यहां पहिला पङ्क्तिका सामान्य अर्थ, आपके सम्मुख उपस्थापन कर रही हुँ जो इस प्रकार है:-

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं।
यशश्चारू चित्रं धनं मेरूतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे।
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥१॥

इस मधुर और मोहक पङ्क्तिका अर्थ इस प्रकार है:-

मनुष्य अपना स्वाभाविक प्रकृति के तौर से ही सदैव रूप-रंग, प्रियतमा, यश-कीर्ति, धन-ऐश्वर्य के पीछे पागल की भांति दौडता रहता है। ये सब प्राप्त करना असम्भव भी नहीं है। परन्तु इन सब को हासिल करनेके बाद मानों उनका मनमें और पंख लग जाते है। और खुदको संसार का सबसे सुखी मान लेता है। काश, मनुष्य एहसास करके यह समझ पाता कि सच्चा सुख इन व्यर्थ साधन में नहीं बल्कि गुरुके चरणकमल या उनके प्रति समर्पित होनेमें ही जीवन सार्थक है। इसके अलावा सबकुछ निरर्थक है। आदि शंकराचार्यजी ने इस भाव स्पष्ट किये है की अपनी गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण के बिना, हमारी कोई भी उपलब्धियां, यश, ज्ञान और अपार धन-ऐश्वर्य तथा पार्थिवउपलब्धियां सबकुछ ब्यर्थ तथा बेकार है। अर्थगर्भित होनेकी साथ साथ काव्यिक सौन्दर्य और आलङ्कारिक प्रयोग में भरपुर इस रचना सर्पगतिकी भांति या सागरकी लहरों की भांति अवलीलाक्रम मे सज्जित है जो पाठक की मनको अनायास ही आकृष्ट करलेता है। इस श्लोक के बारे मे मेरा यह कहना है कि, ईश्वर का अस्तित्व तो एक अकाट्य सत्य है, पर उनका प्रत्यक्ष रुपको किसी का अपना जीवन में स्वीकार करना तथा मन, वचन और कर्म से उनको अङ्गीकार करना ही मेरी सोंचविचार में किसी भी मनुष्य का परम कर्तव्य है। इसलिए "गुरु अष्टकम्" में अपनी गुरूको मेरी जीवन की आध्यात्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण स्थान, मैं न्यौछावर करती हुँ।

वर्णमाला / 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆩𑆳𑆬𑆳

Devanagari	Sharada	Word	Sharada word
अ	𑆃	अनार	𑆃𑆤𑆳𑆫
आ	𑆄	आम	𑆄𑆩
इ	𑆅	इमली	𑆅𑆩𑆬𑆵
ई	𑆆	ईख	𑆆𑆒
उ	𑆇	उल्लू	𑆇𑆬𑇀𑆬𑆷
ऊ	𑆈	ऊन	𑆈𑆤
ऋ	𑆉	ऋषि	𑆉𑆰𑆴
ए	𑆍	एकतारा	𑆍𑆑𑆠𑆳𑆫𑆳
ऐ	𑆎	ऐनक	𑆎𑆤𑆑
ओ	𑆏	ओखली	𑆏𑆒𑆬𑆵
औ	𑆐	औषध	𑆐𑆰𑆣
अं	𑆃𑆁	अंगूर	𑆃𑆁𑆓𑆷𑆫
अः	𑆃𑆂		

Devanagari	Sharada	Word	Sharada word
क	𑆑	कबूतर	𑆑𑆧𑆷𑆠𑆫
ख	𑆒	खरगोश	𑆒𑆫𑆓𑆾𑆯
ग	𑆓	गमला	𑆓𑆩𑆬𑆳
घ	𑆔	घड़ी	𑆔𑆝𑇊𑆵
ङ	𑆕		
च	𑆖	चरखा	𑆖𑆫𑆒𑆳
छ	𑆗	छाता	𑆗𑆳𑆠𑆳
ज	𑆘	जूता	𑆘𑆷𑆠𑆳
झ	𑆙	झंडा	𑆙𑆁𑆝𑆳
ञ	𑆚		
ट	𑆛	टमाटर	𑆛𑆩𑆳𑆛𑆫
ठ	𑆜	ठठेरा	𑆜𑆜𑆼𑆫𑆳
ड	𑆝	डमरू	𑆝𑆩𑆫𑆷
ढ	𑆞	ढोलकी	𑆞𑆾𑆬𑆑𑆵
ण	𑆟		
त	𑆠	तरबूज़	𑆠𑆫𑆧𑆷𑆘𑇊
थ	𑆡	थैला	𑆡𑆽𑆬𑆳
द	𑆢	दूध	𑆢𑆷𑆣
ध	𑆣	धनुष	𑆣𑆤𑆶𑆰
न	𑆤	नारियल	𑆤𑆳𑆫𑆴𑆪𑆬
प	𑆥	पतंग	𑆥𑆠𑆁𑆓
फ	𑆦	फल	𑆦𑆬
ब	𑆧	बकरी	𑆧𑆑𑆫𑆵
भ	𑆨	भालू	𑆨𑆳𑆬𑆷
म	𑆩	मछली	𑆩𑆗𑆬𑆵
य	𑆪	यज्ञोपवीत	𑆪𑆘𑇀𑆚𑆾𑆥𑆮𑆵𑆠
र	𑆫	रस्सी	𑆫𑆱𑇀𑆱𑆵
ल	𑆬	लट्टू	𑆬𑆛𑇀𑆛𑆷
व	𑆮	वाहन	𑆮𑆳𑆲𑆤
श	𑆯	शलगम	𑆯𑆬𑆓𑆩
ष	𑆰	षटकोण	𑆰𑆛𑆑𑆾𑆟
स	𑆱	सेब	𑆱𑆼𑆧
ह	𑆲	हिरण	𑆲𑆴𑆫𑆟
क्ष	𑆑𑇀𑆰	क्षत्रिय	𑆑𑇀𑆰𑆠𑇀𑆫𑆴𑆪
त्र	𑆠𑇀𑆫	त्रिशूल	𑆠𑇀𑆫𑆴𑆯𑆷𑆬
ज्ञ	𑆘𑇀𑆚	ज्ञानी	𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆵

Arabic	Devanagari	Sharada
0	०	𑇐
1	१	𑇑
2	२	𑇒
3	३	𑇓
4	४	𑇔
5	५	𑇕
6	६	𑇖
7	७	𑇗
8	८	𑇘
9	९	𑇙

CORE SHARADA TEAM FOUNDATION

MAATRIKA SURVEY FEEDBACK

- “It’s a good Platform to spread sharada lipi” …..Sangitha gururaj
- “My pleasure to be a member in your mailbox.” …. Vijay Kumar Kaul
- No fresh suggestions. “Not required yet. Your performance is already incredible, amazing, authentic and overall speechless.” …… Santjee Thusu
- “It would be great if we regularly maintain One poem/ stotram on Sharada Devi., From Devnagari to Sharada or vice versa…….” …..Bapanamba Tadi
- “Can we, the students also contribute to matrika magazine, by writing something?” …Sowjanya S
- “Start Kashmiri classes for Sharda” ……..Om Prakash Kakroo
- “Would request to come up with journal about our festival celebration and Puja vidhi’s.” ….Sheetal Parimoo
- “My obeisance to Maa Sharadha” ……Ramapriya S
- “Thanks this is an awesome journal. Let me know if you want English editors.”….Malini
- “Heartiest greetings to the editorial team for this purposeful language inculcating initiative. Hope it makes up for an enjoyable reading month after month. Thanks and best regards.”….. Dr. Suneel Deambi
- “Please keep promoting the koshur language and upgrade your Sharda teaching software to be even better. Also please cover a variety of different genres in your magazine.”……… Harsh Kumar
- “Kashmiri poetry magazine should be printed in Sharada Script. Please print it and open international subscriptions.”……….Arqam Khawaja

शुर्यन हुंद्य बॉथ

काव करान टाव टाव ,
मामन्य देदी पोछ हय आव ,
मामन लोयी दोगुय दोगुय,
कुनि मय लॊगुय मामने ,
आमन्य मामन्य ज़ामन आय ,
व्वथी नोशे बतु फ्यार ,
फ्यारख न तय करय लार ।

Our publications :-

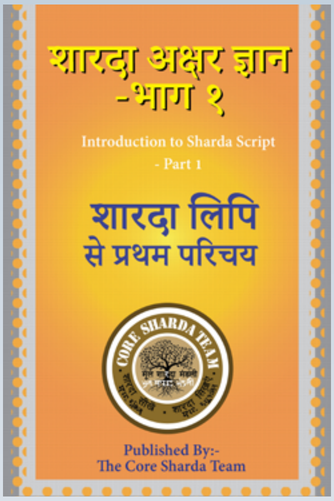

Price Rs 100/-

BUY NOW

Price Rs 100/-

BUY NOW

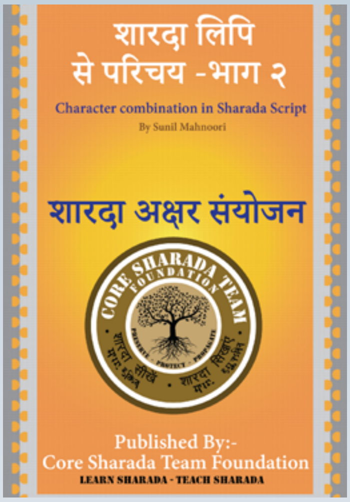

Price Rs 175/-

BUY NOW

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539
instagram.com/coreshardateam
shardalipi.com
twitter.com/CoreSharada
maatrika.cst@gmail.com
Phone - 98301 35616 / 90089 52222

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank, Airport Rd., Bangalure
Account No: 5020 0054 8093 36
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206 12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

© The contents of Maatrika are copyright of The Core Sharada Team Foundation.
Any redistribution or reproduction in part or all of the contents in any form is prohibited.